अर्पणपत्रिका

>><<

नादाब्धिनिर्मन्थनबद्धभावान्

विद्वद्वरान् गायकवादकांश्च ।

नत्वा तदंघ्रयंबुजमञ्जरीषु

संगीतशिक्षाभिनवार्पितेयम ॥

श्री. ना. रा.

३१-१२-५२

अभिनव संगीतशिक्षा

(प्रथम भाग)

भारतीया रागतालस्वरानन्दप्रदायिनी ।
नादविद्या यत्स्वभावो भारतीं प्रणमामि ताम् ॥

प्रस्तावना

यह तो मानी हुई बात है कि सगीत जैसी क्रियासिद्ध कला की शिक्षा प्रत्यक्ष आदश-द्वारा जितनी अच्छी हो सकती है उतनी अच्छी उसके केवल शाब्दिक विवरण से नहीं हो सकती। विगत काल में गुरु-मुख से पाठ लेकर उनको कण्ठस्थ करना यही सगीत शिक्षा की परपरा थी। परतु सद्य स्थिति में जब कि सहस्रावधि सज्जन सगीत के उपासक हुए हैं और इस कला को अपनाने का दृढ सकल्प किये हुए हैं, पूर्वप्रचलित गुरुमुखप्रणाली लगभग असभाव्य सी ही हो गयी है। पाठशालाओं की कक्षाओं में जहां ३० ४० छात्र इकट्ठा शिक्षा पाते हैं, तथा अन्यत्र, जहां सगीतप्रेमी सज्जनों का प्रत्यक्ष गुरुमुख से शिक्षा पाकर इस कला में प्रावीण्य सपादन करना असभव होता है। सगीत में आनेवाली महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का शाब्दिक वर्णन पर्याप्त सहायक हो जाता है। इस बात के अतिरिक्त पाठ्य पुस्तकों द्वारा शिक्षा प्रणाली नियमबध्द हो जाती है। गुरुमुख से शिक्षा भिन्न भिन्न प्रकार की एव अनियमित होने का सभव अधिकतर रहता है। विभिन्न परपरा के गायकों से परपरागत एक ही रागदारी गीत के विभिन्न पाठ सुनाई

देते हैं तब इनमें से अधिक विश्वसनीय कौन सा हो सकता है, यह प्रश्न उठता है, उसी प्रकार कुछ रागों के सबन्ध में भी यह परिस्थिति प्रतीत होती है। इसका कारण यही है कि पूर्वप्रचलित प्रणाली में स्वरलेखन का प्रचार तो था नहीं, न पाठ्य पुस्तकें ही थीं। सब गीत केवल मुखोद्गत किये जाते थे। इस रीति से सीखने सिखाने से गीत के पाठों में परिवर्तन सहेतुक, निर्हेतुक, होना केवल सभाव्य ही नहीं वरन् अनिवार्य है।

कहा ही है "सौ बकया और एक लिख्या" अर्थात् एक लिखी हुई बात सौ कही हुई बातों के बराबर है। आज गुरु के घर वास करके शिक्षा ग्रहण करने के लिये न किसी छात्र को सुविधा है न किसी गुरु को भी छात्रों को अपने घर पर स्थान देकर शिक्षा देने की सुविधा है। अतएव पाठशालाओं में ही सगीत शिक्षा का प्रचार होना स्वाभाविक है। ऐसी परिस्थिति में पाठ्यपुस्तकों की महत्ता विशेष अधिक है। अस्तु।

इसी विचार से मैंने 'अभिनव सगीतशिक्षा" नाम की यह पुस्तक-माला सगीत के विद्यार्थियों के लिये प्रसिद्ध करना आरम्भ किया है। यह पुस्तकमाला "मैरीस कॉलेज ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक" के नये अभ्यास क्रम के अनुसार बनाई है। गत काल में प्रचलित अभ्यास क्रम में कुछ राग प्रथम वर्ष की शिक्षा के लिये बहुत कठिन हो जाते थे ऐसा कुछ लोगों का कहना था। वास्तव में यदि दिन प्रति दिन बिना खड शिक्षा चलती रहे तो पूर्वी, मारवा, तोडी जैसे रागों की स्थूल कल्पना एव उनको सीधे सीधे गाने का सामर्थ्य प्राप्त करा देने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। परन्तु वर्ष भर अखड चलने वाली कक्षाए पाठशालाओं में चलना असभव है। ७–८ महीनों से अधिक समय कोई कक्षाए कार्य नहीं करतीं। कहीं-कहीं तो ६–६ महीनों का समय छुट्टियों में ही चला जाता है और केवल ६ महीने ही कक्षाओं का कार्य होता है। इतनी थोड़ी अवधि में पूर्वोक्त रागों को भी, अतिरिक्त और ६-७ रागों के, सिखाना असभव है।

अतएव इन रागों के स्थान पर और सरल एवं विशेष लोकप्रिय रागों को रख कर उक्त कठिन रागों को पश्चात् की ऊँची कक्षाओं के अभ्यास क्रम में रखना योग्य समझकर अभ्यास का नया क्रम सन १६४६ में बनाया गया था। और इस नये अभ्यास क्रम के ही अनुसार शिक्षा आज ३ वर्ष होती रही है। पिछले वर्ष नये अभ्यास क्रम के इन तीन वर्षों के अनुभव पर विचार करने के लिये पुनश्च एवं सभा मॅरीस कालेज के कुछ शिक्षक एवं भातखंडे संगीत विद्यापीठ से संलग्न संस्थाओं के अध्यापकों की उसी कॉलेज में हुई, और नये अभ्यास क्रम में पुनश्च कुछ परिवर्त्तन किया गया। इस दुबारा संशोधित अभ्यास क्रम के ही अनुसार यह पुस्तकमाला बनाई गयी है।

इस प्रथम भाग में प्राथमिक शिक्षा के ही सब पाठ दिये हुए हैं। इसमें आये हुए गीत आज कल की सर्व साधारण जनता की अपेक्षा के अनुरूप ही नये रच गये हैं। स्वरताल-लय इत्यादि के पाठ भी क्रमानुसार बनाए गये हैं। इसमें आये हुए रागों के नियम आरोहावरोह तथा स्वर विस्तार भी दिये हैं जिनसे अध्यापक एवं छात्रों को कक्षा में सिखाने-सीखने में सुविधा हो।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक पूर्णतया उपयोगी होगी। मैंने तो प्रयत्न किया है, आगे ईश्वर की कृपा।

लखनऊ
दि० ३१ डिसेंबर १६५२

इति
श्री० ना० रातंजनकर।
लेखक।

अभिनव संगीतशिक्षा—प्रथम भाग

सूची

स्वरलिपि का खुलासा

रे, ग, ध, नि:— इन स्वरो के नीचे "–" ऐसी आडी लकीर हो, जैसे— रे ग ध नि तो वे कोमल समझना चाहिए। वैसी न हो तो तीव्र या शुद्ध समझना चाहिए।

म— इस प्रकार लिखा हुआ शुद्ध या कोमल "म" समझा जाय।

मं— इस प्रकार लिखा हुआ तीव्र "म" समझा जाय।

•— जिन स्वरो के नीचे ऐसी बिन्दी हो वे मंद्रसप्तक के तथा जिनके माथेपर वह होगी ये सब तारसप्तक के स्वर समझे जांय। बगैर बिन्दी के सब स्वर मध्यसप्तक के हैं।

‿ — इस चिह्न के अन्दर लिखे हुए सब स्वर एकमात्रा काल में गाने होंगे। जैसे म ग रे सा

⁀ — यह चिह्न मीड का है। किस स्वर से किस स्वर पर मीड लेकर जाना चाहिए यह बताता है। जैसे प रे

— जिस स्वर के आगे यह चिह्न हो उस स्वर पर जरूरी वक्त तक और अधिक ठहरना है। चिह्न की जगह खाली हो तो वह उतने ही काल की विश्रांति समझना चाहिए।

ऽ — गीतो के बोलो में जहाँ ऐसी अवग्रह के चिह्न हों, वहाँ पिछले अक्षर का अन्तिम स्वर (आकार, इकार इ.) उतने ही काल तक और बढ़ाना चाहिए।

कहीं-कहीं स्वरों के माथेपर बाईं ओर छोटे हर्फों में लिखे हुये स्वर होते हैं जैसे $\overset{\text{प}}{\text{म}}$, $\overset{\text{नि}}{\text{प}}$, इनको अलंकारिक स्वर ("ग्रेस नोट्स्") कहते हैं। ये छोटे कन् नये-नये छात्रों के गले से लग सकें तो गाना अधिक मीठा होगा।

( )— ऐसे कंस में लिखा हुआ स्वर बहुत ही द्रुत में दो बार गाना है, जिसमें पहली बार उसको ऊपर के स्वर का कन् व दूसरी बार नीचे के स्वर का कन् देकर उसको गाना है जैसे —

(प) = $\overset{\text{ध}}{\text{प}}$ $\overset{\text{म}}{\text{प}}$ या धपमप

(म) = $\overset{\text{प}}{\text{म}}$ $\overset{\text{ग}}{\text{म}}$ या पमगम

(सा) = $\overset{\text{रें}}{\text{सा}}$ $\overset{\text{नि}}{\text{सा}}$ या रेंसानिसा

× — यह चिह्न गान के ताल का सम बताता है। सम को हमेशा १ ताली गिनकर और तालियों के क्रमांक लगाने चाहिए।

० — यह चिह्न खाली के है।

, — गीतों में कहीं-कहीं स्वल्प विराम दिये गये हैं, वहां रुकने का मतलब नहीं है, वे केवल गीत के अलग-अलग टुकड़े बताते हैं।

प्राथमिक सूचना

१—अपनी शक्ति के अनुसार गला खोलकर आकार में गाना। रागदारी संगीत में दबी हुई आवाज में गाने से चाहे जितना अभ्यास क्यों न किया जाये गला कभी नहीं बनेगा।

२—अपने गले का स्वभाव धर्म न बिगाड़ते हुए गाना। कृत्रिम (नकली) आवाज में गाने से आवाज बिगड़ जाती है।

३—प्रत्येक मनुष्य के आवाज की ऊँची नीची मर्यादा रहती है। मर्यादा से बाहर ऊँचे स्वर में गाना नहीं चाहिये, उससे गले की नसो पर जोर पड़कर गला बिगड़ जाता है। साधारणतया मन्द्र पचम से लेकर तार सप्तक के पचम पर्यंत साफ सुनाई दे ऐसी ऊँचाई पर षड्ज निश्चित करना चाहिये। यह बात विशेषत. रागदारी सगीत के सबध में ध्यान रखने योग्य है। हलके गीतो में हलकी आवाज में एव ऊँचे स्वर में गाने में कोई बाधा नहीं, क्यों कि उनमें न बहुत ऊँचा न नीचा जाना पड़ता है। अधिकतर छोटे छोटे मधुर स्वरालापो में शब्दों को दुहराते हुए हलके गीतो का गाना होता है।

४—रागदारी सगीत में शब्दो का उच्चारण भी चौड़ा होना चाहिये।

५—गानक्रिया में श्वास नियन्त्रण (साँस पर काबू) अत्यत महत्वपूर्ण है। अभ्यास से इच्छानुसार सांस रोकने का सामर्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। धीमी लय में स्वरो पर ठहरते हुए गाने का अभ्यास करने से श्वास नियंत्रण सध जाता है।

६—आवाज की शक्ति, ऊंची नीची मर्यादा तथा उसके स्वभावधर्म (जाति) पर यथा योग्य ध्यान रखते हुए एव श्वासनियन्त्रण का अभ्यास करते हुए गाने पर अवश्य यश प्राप्त होगा।

७—साधारणतया स्त्री तथा बालक की आवाज का षड्ज "सा" F(३४१$\frac{१}{३}$ स्फुरण वेग के स्वर) से A(४२६$\frac{२}{३}$ स्फुरण वेग के स्वर) पर्यंत किसी एक स्वर पर रहता है जब कि पुरुषों का षड्ज C(२५६ स्फुरण वेग के स्वर) से E(३२० स्फुरण वेग के स्वर) पर्यंत किसी स्वर पर रहता है।

८—आवाज की जाति एवं ऊँची-नीची मर्यादा पर ध्यान रखते हुए विद्यार्थियों की गणरचना (कक्षाएँ) होनी चाहिये।

पाठ १

संगीत का प्रथम स्वर "षड्ज" अथवा "खर्ज" है। प्रत्यक्ष गाने में इसको "सा" कह कर गाया जाता है।

मान लो कि यह 'सा' एक सेकण्ड कालावकाश में गाया जाता है। अब 'सा' स्वय एक सेकंड कालावधि मे गाना है और उसके आगे जितने '—' ये चिन्ह होंगे उतने सेकड उस पर अधिक ठहरना है जैसे:—

सा — — — — — — —

सा स्वय एक सेकंड और उसके आगे सात सेकंड और ठहरना है। अतएव सब मिलकर आठ "सा" गाना है।

एक सेकड को एक मात्रा कहेंगे। अब आठ मात्रा तक तक 'सा' गाओ, मात्रा दाहिने हाथ की पहली उँगली से बायें हाथ पर आघात करते हुए गिनो:—

सा — — — — — — —
सा — — — — — — —
सा — — — — — — — इत्यादि

(शिक्षक स्वय विद्यार्थियों के साथ मात्रा गिनते हुए गाता रहे) आवाज खोलकर गाओ।

अब 'सा' के स्थान पर 'आ' आठ मात्रा तक गाते जाओ जैसे:—

स्वर { सा — — — — — — —
उच्चार { आ — — — — — — —

स्वर { सा — — — — — — —
उच्चार { आ — — — — — — —

स्वर { सा — — — — — — —
उच्चार { आ — — — — — — —

इत्यादि

फलक पर 'सा' लिखा जाता है उसको पढ़ते हुए गाओ:—
सा — — — — — — —

स्वरों की हाथ की निशानियाँ भी होती हैं। इनको हम लोग मुद्रा कहेंगे। दाहिने अथवा बायें हाथ की १ ली (तर्जनी) उँगली खोल कर 'सा' दिखाया जाता है। जैसे

स्वर — सा
मुद्राएँ

(शिक्षाक्रम:—दो तीन दिन इस प्रकार फलक पर 'सा — — — — — — — —' लिखकर उस पर निर्देश करते हुए एवं हस्त संकेत से काम लेते हुए कभी-कभी विद्यार्थियों से 'सा' गवाया जाय। गवाते समय कण्ठस्वर का उच्चारण एवं श्वास नियंत्रण पर लक्ष्य पहुँचाते हुए गवाना चाहिये। प्रथम प्रथम शिक्षक को विद्यार्थियों के संग स्वयं गाना होगा। जैसे ही विद्यार्थियों के कानों में स्वर ठीक जम जाये और वे स्वय गा सकेंगे हस्त संकेत एवं फलक पर लिखकर गवाना चाहिये।)

पाठ २

यही 'सा' (षड्ज) ऊँची आवाज से गाया जाता है तब उसको बडा 'सा' अथवा तार सप्तक का सा अथवा 'तार सा' कहते हैं। यह बड़ा 'सा' पहले 'सा' से दुगना ऊँचा होता है।

(शिक्षा क्रम —तीन चार दिन 'सा' (मध्य सप्तक का) विद्यार्थियों से ठीक स्थिर एवं मीठे कण्ठस्वर में गाना सध जाने के पश्चात् उनसे तार सप्तक का 'सा' गवाया जाय। यह 'सा' गवाते समय आवाज में किसी प्रकार की कर्कशता एवं कपन न उत्पन्न हो इस पर ध्यान देते हुए गवाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि आवाज दबाते हुए गाना है। आवाज को खोल कर ही गाना चाहिए पर उसमें कर्कशता अथवा कम्पन न हो)

लिखने में बडा 'सा' ऊपर एक बिंदी देकर लिखा जाता है जैसे 'सां'

(फलक पर 'सां — — — — — — —' लिखा जाय) अब इस सा को आठ मात्रा तक स्थिरता के साथ गाओ। अब इसी सा को 'आ'कार में आठ मात्रा तक स्थिरता के साथ गाओ जैसे —

सां — — — — — — — —

आ — — — — — — — —

सां दाहिने अथवा बायें हाथ की सब उँगलियाँ खोलकर इस प्रकार दिखाया जाता है।

मुद्राएँ

अथवा

(शिक्षाक्रम —प्रथम स्वयं गाकर फलक पर लिखकर एवं हस्त संकेत से काम लेते हुए दोनों 'सा' गवाना चाहिये)

पाठ ३

सा से पाँचवें स्वर का नाम पचम है। गाने में इसको 'प' कहते हैं।

शिक्षाक्रम —(सात आठ दिन छोटा और बड़ा दोनों षड्ज विद्यार्थियों से ठीक गवाकर तब पंचम सिखाया जाय) पंचम लिखने में प लिखा जाता है जैसे प — — — — — — —

शिक्षाक्रम —(फलक पर लिखकर मात्राओं के साथ गवाया जाय)
गाओ प— — — — — — — —। इसी प को आकार में आठ मात्रा तक गाओ।

प — — — — — — —

आ — — — — — — —

शिक्षाक्रम:—(ऊपर बताये अनुसार सा, प, सां स्वयं गाकर फलक पर लिखकर गवाया जाय)

प केवल दाहिने हाथ की बीच की तीन उँगलियों को (तर्जनी, मध्यमा और अनामिका) खोलकर इस प्रकार दिखाया जाता है।

मुद्रा

प

पाठ ४

गाते हुए किसी एक अथवा अधिक मात्रा पर चुप हो जाने को विश्रांति कहते हैं। विश्रान्ति का चिन्ह '०' लिखकर समझेंगे। अब 'सा' की आठ मात्रा में से आठवीं, सातवीं और आठवीं; छठी, सातवीं और आठवीं तथा पाँचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं; इस प्रकार मात्राओं पर विश्रांति रखते हुए गाओ। जैसे

(१) सा — — — — — — ०

(२) सा — — — — — ० ०

(३) सा — — — — ० ० ०

(४) सा — — — ० ० ० ०

शिक्षाक्रम (ऊपर लिखे हुए पाठ फलक पर लिखकर एवं मात्रा गिनते हुए विद्यार्थियों से गवाये जायँ)

अब ये विश्रांतियाँ पहले लेकर उसके पश्चात् सा गाओ।

(१) ० सा — — — — — —
(२) ० ० सा — — — — —
(३) ० ० ० सा — — — —
(४) ० ० ० ० सा — — —

पाठ ५

चौथे पाठ में सिखाए हुए विश्रांति स्थानों पर स्वयं सा अथवा प अथवा सां गाओ जैसे :—

१ (अ) सा — — — — — — सा
(ब) सा — — — — — सा सा
(स) सा — — — — सा सा सा
(द) सा — — — सा सा सा सा
(इ) सा सा — — — — — —
(फ) सा सा सा — — — — —
(ग) सा सा सा सा — — — —
(ह) सा सा सा सा सा — — —
२ (अ) सा — — — — — — सां
(ब) सा — — — — — सां सां

(स) सा — — — — सां सां सां

(द) सा — — — सां सां सां सां

(इ) सां सा — — — — — —

(फ) सां सां सा — — — — —

(ग) सां सां सां सा — — — —

(ह) सां सां सां सां सा — — —

३ (अ) सा — — — — — — प

(ब) सा — — — — — प प

(स) सा — — — — प प प

(ड) सा — — — प प प प

(इ) प सा — — — — — —

(फ) प प सा — — — — —

(ग) प प प सा — — — —

(ह) प प प प सा — — —

(शिक्षाक्रम:—ये सब पाठ फलक पर लिखकर तथा हस्तसंकेतों से काम लेते हुए बार बार दोहराये जायँ ।)

पाठ ६

अब चौथे पाठ में दिये हुए विश्रांति स्थानों में से किसी एक ही पर मा, मां अथवा प गाओ जैसे

१—(अ) सा — — — — — — सा

(ब) मा — — — — — सा ०

सा — — — — — ० मा

(स) सा — — — — सा ० ०

सा — — — — ० सा ०

सा — — — — ० ० सा

(द) सा — — — सा ० ० ०

सा — — — ० सा ० ०

सा — — — ० ० सा ०

सा — — — ० ० ० सा

(इ) सा सा — — — — — —

(फ) ० सा सा — — — — —

सा ० सा — — — — —

(ग) ० ० सा सा — — — —

० सा ० सा — — — —

सा ० ० सा — — — —

(छ) ० ० ० सा सा — — —
० ० सा ० सा — — —
० सा ० ० सा — — —
सा ० ० ० सा — — —

२—(अ) सा — — — — — — — सां
(ब) सा — — — — — सां ०
सा — — — — — ० सां
(स) सा — — — — सां ० ०
सा — — — — ० सां ०
सा — — — — ० ० सां
(ड) सा — — — सां ० ० ०
सा — — — ० सां ० ०
सा — — — ० ० सां ०
सा — — — ० ० ० सां
(इ) सां सा — — — — — —
(फ) ० सां सा — — — — —
सां ० सा — — — — —
(ग) ० ० सां सा — — — —
० सां ० सा — — — —
सां ० ० सा — — — —

(द) ० ० ० सां सा — — —
० ० सां ० सा— — —
० सां ० ० सा — — —
सां ० ० ० सा — — —

३—(अ) सा — — — — — — — प
(ब) सा — — — — — — ० प
सा — — — — — — प ०
(स) सा — — — — — प ० ०
सा — — — — — ० प ०
सा — — — — — ० ० प
(ड) सा — — — प ० ० ०
सा — — — ० प ० ०
सा — — — ० ० प ०
सा — — — ० ० ० प
(इ) प सा — — — — — — —
(फ) ० प सा — — — — — —
प ० सा — — — — — —
(ग) ० ० प सा — — — —
० प ० सा — — — —
प ० ० सा — — — —

(ये स्वर पाठ फलक पर लिखकर एवं हस्त संकेतों के द्वारा बार बार दोहराए जांय। विश्रांति स्थानों को, एक, दो, तीन, इत्यादि फेर फार करते हुए बच्चों से दोहराये जाने पर लय का ज्ञान उनको ठीक होता रहेगा।)

पाठ ७

(सूचना —छात्रों को 'सा' 'प' एवं 'सा' ठीक याद होने पर अर्थात् हस्त संकेत द्वारा अथवा फलक पर लिख कर पूछे हुए, इनमे से किसी एक अथवा अधिक स्वरों को छात्र स्वयं अपनी बुद्धि से गले से निकाल सके एवं शिक्षक ने गाया हुआ कोई भी स्वर छात्र ठीक पहचान सके इतनी प्रगति होने पर अब आगे के स्वर सिखाने चाहिये)

तीसरे स्वर का नाम गांधार है। गाते हुए उसको ग कहते हैं। लिखने मे गांधार को 'ग' करके लिखते हैं।

(फलक पर लिखकर मात्राओं के साथ गवाया जाय)

गाओः— ग — — — — — — —

अब इसी ग को आकार मे गाओ।

ग — — — — — — —

आ — — — — — — —

गांधार दाहिने हाथ की दो उंगलियों को अर्थात् तर्जनी एवं मध्यमा को खोल कर दिखाया जाता है। जैसे —

स्वर मुद्रा

ग
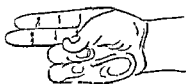
सूचना — निम्नलिखित पाठ छात्रों से बार बार दोहराए जायँ। हस्तसंकेत द्वारा एवं बोर्ड पर लिखकर गवाये जायँ)

(१) ग — — — — — — —

(२) सा — — — — — — — — ग — — — — — — — —

(३) सां — — — — — — — ग — — — — — — — —

(४) ग — — — — — — — सा — — — — — — — —

(५) ग — — — — — — — सां — — — — — — — —

(६) सा — — — — — — — ग — — — — — — — —

सां — — — — — — — —

(७) सां — — — — — — — ग — — — — — — — —

सा — — — — — — — —

(८) ग — — — — — — — प — — — — — — — —

(९) प ——————— ग ———————

(१०) सा ——— ग ——— प ——— सां ———

(११) सां ——— प ——— ग ——— सा ———

(१२) सा ——— प ——— ग ——— सां ———

(१३) सां ——— ग ——— प ——— सा ———

(१४) सा —— ग —— प — सां ————————

(१५) सां —— प —— ग — सा ————————

(१६) सा — ग — प — सां — सां — प — ग — सा —

(१७) सा — प — ग — सां — सां — ग — प — सा —

(१८) सा —— ग प —— सां सां —— प ग —— सा

(ऐसे अनेक प्रकार स्वर पाठों के लिखकर एवं उन्हीं को हस्त संकेत द्वारा स्वरोचार तथा आकार सहित क्रमानुसार दोहराया जाय। बीच-बीच में विश्रान्ति चिन्हों को भी समाविष्ट कर के पाठ दिये जायँ। विश्रान्ति चिन्हों का उपयोग करना हो वो कहीं कहीं '—' ऐसी रेखाएँ जहाँ हों उनके स्थान पर "०" ऐसे विश्रान्ति चिन्हों को लिखा जाय।)

पाठ—८

सातवें स्वर को निषाद अथवा निसाद कहते हैं। निषाद 'नि' कर के लिखा जाता है। गाते हुए भी नि कहा जाता है।

निषाद दाहिने हाथ की चार उँगलियों को अर्थात् तर्जनी मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठिका को गोल कर दिखाया जाता है।

जैसे

= नि

दोहराने के पाठ

(१) नि — — — — — — —
(२) सां — — — — — — — नि — — — — — — — —
(३) प — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(४) ग — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(५) सा — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(६) सां — — — नि — — — प — — — ग — — —
(७) सा — — — ग — — — प — — — नि — — —
(८) सा — — ग — — प — — नि — — सां — — —
(९) सां — — नि — — प — — ग — — सा — — —
(१०) सां — — — प — — — नि — — — ग — — —

(११) सा — — — प — — — ग —.— — नि — — —
(१२) सां — — — ग— — — नि — — — प — — —
(१३) सा ——— नि——— ग——— प — — —
(१४) सा — ग — प — ग — प — नि — सां — — — —
(१५) सां —नि — प — नि — प — ग — सा — — —
(१६) सा — ग — प — नि —सां — नि — प — ग —
(१७) सां — नि —प — ग — सा — ग — प — नि —
(१८) सा — प — ग —प— नि — प — सां — — —
(१९) सा — प —नि —प— ग — प — सा — — —

(हस्त संकेत फलक पर स्वरलिपि एवं विश्रान्ति चिन्हों से बराबर काम लिया जाय।)

पाठ ९

दूसरे एवं छठे स्वरों को क्रमशः ऋषभ अथवा रिखब एवं धैवत कहते हैं। गाते हुए ऋषभ को री अथवा 'रे' एवं धैवत को 'ध' कहते हैं।

ऋषभ बाँये हाथ की दो उँगलियाँ अर्थात् तर्जनी एवं मध्यमा खोलकर दिखाया जाता है। जैसे —

निषाद दाहिने हाथ की चार उँगलियों को अर्थात् तर्जनी मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठिका को गोल कर दिखाया जाता है।

जैसे

= नि

दोहराने के पाठ

(१) नि — — — — — — —
(२) सां — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(३) प — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(४) ग — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(५) सा — — — — — — — — नि — — — — — — — —
(६) सां — — — नि — — — प — — — ग — — —
(७) सा — — — ग — — — प — — — नि — — —
(८) सा — — ग — — प — — नि — — सां — — —
(९) सां — — नि — — प — — ग — — सा — — —
(१०) सां — — — प — — — नि — — — ग — — —

(११) सा — — — प — — — ग — — — नि — — —
(१२) सां — — — ग — — — नि — — — प — — —
(१३) सा — — — नि — — — ग — — — प — — —
(१४) सा — ग — प — ग — प — नि — सां — — — —
(१५) सां — नि — प — नि — प — ग — सा — — —
(१६) सा — ग — प — नि — सां — नि — प — ग —
(१७) सां — नि — प — ग — सा — ग — प — नि —
(१८) सा — प — ग — प — नि — प — सां — — —
(१९) सा — प — नि — प — ग — प — सा — — —

(हस्त संकेत फलक पर स्वरलिपि एवं विश्रान्ति चिन्हों से बराबर काम लिया जाय ।)

पाठ ६

दूसरे एवं छठे स्वरों को क्रमशः ऋषभ अथवा रिखब एवं धैवत कहते हैं। गाते हुए ऋषभ को री अथवा 'रे' एव धैवत को 'ध' कहते हैं।

ऋषभ बाँये हाथ की दो उँगलियों अर्थात् तर्जनी एवं मध्यमा खोलकर दिखाया जाता है। जैसे —

धैवत बायें हाथ की चार अंगलियाँ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका एव कनिष्ठिका खोल कर दिखाया जाता है।

जैसे —

ध = ध

ऋषभ साधन व दोहराने के पाठ

(१) री————————
(२) सा————————री————————
(३) ग ————————री————————
(४) प ————————री————————
(५) सा———री———ग——— प———
(६) प———ग———री———मा———
(७) सा—री— ग— प—नि———सां———
(८) सां—नि—प—ग—री——— सा———
(९) सा—ग—री—प—ग—नि— प —सां—
(१०) सां— प —नि —ग—प—री— ग —सा—

जैसे बड़ा अथवा तार सप्तक का सा होता है इसी प्रकार बड़ा अथवा तार सप्तककारी, बड़ा अथवा तार सप्तक का ग भी होता है। तार सप्तक के सब स्वरों पर एक बिन्दी दी जाती है जैसे तार सप्तक के सा पर दी जाती है।

जैसे—(१) रीं अथवा रें
(२) गं

तार सप्तक के स्वर केवल हाथ ऊँचा उठाकर उनके यथा योग्य संकेत करके दिखाये जाते हैं।

रीं

री

गं

ग
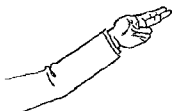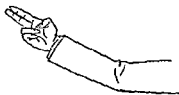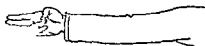
अब इन स्वरों को भी और स्वरों के साथ गावें —

(१) री — — — — — — — रीं — — — — — — —
(२) ग — — — — — — — गं — — — — — — —
(३) सा — री — ग — — — मां — रीं — गं — — —

(४) सा — री — — — ग — सां — रीं — — — गं —
(५) गं — रीं — सां — — — ग — री — सा — — —
(६) गं — रीं — — — सां — ग — री — — — सा —
(७) सा — — — री — ग — सां — — — रीं — गं —
(८) गं — — — रीं — सां — ग — — — री — सा —
(९) सा — री — ग — प — नि — सां — रीं — गं —
(१०) गं — रीं — सां — नि — प — ग — री — सा —

इत्यादि और भिन्न-भिन्न अनुक्रम से स्वर समुदाय लिखकर एवं हस्त संकेतों द्वारा दोहराए जाँय।

धैवत साधन

दोहराने के पाठ

(१) ध — — — — — — — —
(२) प — — — — — — — — ध — — — — — — — —
(३) सा — — — री — — — प — — — ध — — —
सा — — — रीं — — —
(४) रीं — — — सां — — — ध — — — प — — —
रा — — — सा — — —
(५) सा — — — प — — — ध — — — — — — — —
(६) ध — — — प — — — सा — — — — — — — —
(७) सा — — — ग — — — प — — — ध — — —
(८) ध — — — प — — — ग — — — सा — — —

(९) सा — — री — — ग — — प — — ध — — —

(१०) ध — — प — — ग — — री — — सा — — —

(११) ध — — — नि — — — सां — — — — — — — —

(१२) सां — — — नि — — — ध — — — — — — — —

(१३) ध — — नि — — सां — — रीं — — सां — — —

(१४) सां — — रीं — — सां — — नि — — ध — — —

(१५) प — — ध — — नि — — सां — — रीं — — —

(१६) रीं — — सां — — नि — — ध — — प — — —

(१७) सा — री — ग — प — ध — नि — सां — — —

(१८) सां — नि — ध — प — ग — री — सा — — —

(१९) सा — री — ग — प — ध — नि — सां — रीं — गं — — — — — — — —

(२०) गं — रीं — सां — नि — ध — प — ग — री — सा — — — — — — — —

(२१) (अ) सा — — — री — — — —

(ब) सा — — — ग — — —

(स) सा — — — प — — —

(ड) सा — — — ध — — —

(इ) सा — — — नि — — —

(फ) सा — — — सां — — —

(ग) सा — — — सां — — —

(ह) सा — — — नि — — —
(इ) सा — — — ध — — —
(ज) सा — — — प — — —
(क) सा — — — ग — — —
(ल) सा — — — री — — —

(२२) (अ) सां — — — नि — — —
(ब) सां — — — ध — — —
(स) सां — — — प — — —
(ड) सां — — — ग — — —
(इ) सां — — — री — — —
(फ) सां — — — सा — — —
[ग] सां — — — सा — — —
(ह) सां — — — री — — —
(इ) सां — — — ग — — —
(ज) सां — — — प — — —
(क) सां — — — ध — — —
(ल) सां — — — नि — — —

इत्यादि अदल बदल करते हुए स्वर पाठ दोहराये जायँ।

पाठ १०

चौथे स्वर को मध्यम कहते हैं। लिखने में मध्यम 'म' करके लिखा जाता है। बायें हाथ का तीन उंगलियाँ, तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका खोल कर दिखाया जाता है।

म

मध्यम साधन दोहराने के पाठ

(१) सा — — — — — — — म — — — — — — —

(२) म — — — — — — — सा — — — — — — —

(३) सा — — — — — — — प — — — — — — —
सा — — — — — — — म — — — — — — —

(४) प — — — — — — — सा — — — — — — —
म — — — — — — — सा — — — — — — —

(५) सा — — — प — — — सां — — — — — — —
सां — — — प — — — सा — — — — — — —

(६) सा — — — म — — — मां — — — — — —
सां — — — म — — — सा — — — — — —

(७) सा — — — म — — — प — — — सां — — —
सां — — — प — — — म — — — सा — — —

(८) स — री — सा — — — म — प — म — — —
प — ध — प — — — सां — रीं — सां — — —
(९) सां — रीं — सां — — — प — ध — प — — —
म — प — म — — — सा — री — सा — — —
(१०) स — री — ग — — — म — प — ध — — —
सां — रीं — गं — — —
(११) गं — रीं — सां — — — ध — प — म — — —
ग — री — सा — — —
(१२) सा — — — ग — — — प — — — नि — — —
नि — — — प — — — ग — — — सा — — —
(१३) सा — — — री — — — म — — — ध — — —
ध — — — म — — — री — — — सा — — —
(१४) स — री — ग — म — प — ध — नि — सां —
सां — नि — ध — प — म — ग — री — सा —
(१५) (अ) सा — — — री — — — —
(ब) सा — — — ग — — —
(स) सा — — — म — — —
(ड) सा — — — प — — —
(ई) सा — — — ध — — —
(फ) सा — — — नि — — —
(ग) सा — — — सां — — —

(ह) सां — — — सा — — —
(इ) सा — — — नि — — —
(ज) सा — — — ध — — —
(क) सा — — — प — — —
(ल) सा — — — म — — —
(म) सा — — — ग — — —
(न) सा — — — री — — —

(१६) (अ) सां — — — नि — — —
(व) सां — — — ध — — —
(सा) सां — — — प — — —
(ड) सां — — — म — — —
(ई) सां — — — ग — — —
(प) सां — — — री — — —
(ग) सां — — — सा — — —
(ह) सां — — — सा — — —
(इ) सां — — — री — — —
(ज) सां — — — ग — — —
(क) सां — — — म — — —
(ल) सां — — — प — — —
(म) सां — — — ध — — —
(न) सां — — — नि — — —

(१७) सा — री — ग — म — प — ध — नि —
री — गं — — — — —

(१८) गं — रीं — सां — नि — ध — प — म — ग
री — सा — — — — —

इत्यादि:—पहले सूचित किये अनुसार स्वर लिपि मुद्राएं आदि एवं विभाजित स्थानों पर उपयोग करते हुए आवश्यकतानुसार दोहराए जाँय।

पाठ ११

(१) सारीगमपधनि इस क्रम से ये सात स्वर कहे जाने को (अर्थात चढ़ाव) कहते हैं।

(२) सांनिधपमगरीसा इस क्रम से ये सात स्वर कहे जाने अवरोह (अर्थात् उतार) कहते हैं।

अब ये सब स्वर मुद्राओं के साथ दिखाये जायें:—जैसे

सा = दाहिने हाथ की तर्जनी खुली।

री = बाँये हाथ की तर्जनी और मध्यमा खुली।

ग = दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा खुली।

म = बायें हाथ की तर्जनी मध्यमा एवं अनामिका खुली।

प = दाहिने हाथ की तर्जनी मध्यमा एव अनामिका खुली।
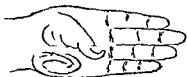
ध = बाये हाथ की तर्जनी, मध्यमा अनामिका एव कनिष्ठिका खुली।

नि = दाहिने हाथ की तर्जनी मध्यमा अनामिका एवं कनिष्ठका खुली।
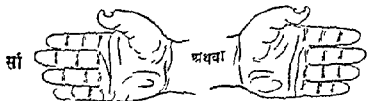
दाहिने हाथ अथवा बायें हाथ की पाँच उंगलियाँ खुली।

अलंकार (पलटे)

(१) आरोहः—सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
अवरोहः—सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

(२) आरोहः—सासा, रेरे, गग, मम, पप, धध, निनि, सांसां।
अवरोहः—सांसां, निनि, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा।

(३) आः—सासासा, रेरेरे, गगग, ममम, पपप, धधध, निनिनि, सांसांसां।
अवः—सांसांसां, निनिनि, धधध, पपप, ममम, गगग, रेरेरे, सासासा।

(४) आः—सरेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां।
अवः—सांनिध, निधप, धमप, पमग, मगरे, गरेसा।

(५) आः—सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां।
अवः—सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा।

(६) आः—सारेगमप, रेगमपध, गमपधनि, मपधनिसां।
अवः—सांनिधपम, निधपमग, धपमगरे, पमगरेसा।

(७) आः—सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसांनि, सां।

अवः—सांनिसां, निधनि, धपध, पमप, मगम, गरेग, रेसारे, सा।

(८) आः—साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां।

अवः—सांध, निप, धम, पग, मरे, गसा।

(९) आः—साम, रेप, गध, मनि, पसां।

अवः—सांप, निम, धग, परे, मसा।

(१०) आः—साप, रेध, गनि, मसां।

अवः—सांम, निग, धरे, पसा।

(११) आः—सारेसारेग, रेगरेगम, गमगमप, मपमपध, पधपधनि, धनिधनिसां

अवः—सांनिसांनिध, निधनिधप, धपधपम, पमपमग, मगमगरे, गरेगरेसा।

(१२) आः—सारेसारेगम, रेगरेगमप, गमगमपध, मपमपधनि, पधपधनिसां।

अवः—सांनिसांनिधप, निधनिधपम, धपधपमग पमपमगरे, मगमगरेसा।

(१३) आः—सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनिधप, धसांनिध, निरेंसांनि, सां।

अवः—सांधनिसां, निपधनि, धमपध, पगमप, मरेगम,

गमारेग, रेनिमारे, मा।

(१४) आः—सारेगसारेगम, रेगमरेगमप, गमपगमपध,
मपधमपधनि, पधनिपधनिसां।

अः—सांनिधसांनिधप, निधपनिधपम, धपमधपमग,
पमगपमगरे, मगरेमगरे सा।

(१५) आः—सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसां।
सांनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेस।

सूचना—यह सब पलटे स्वरोच्चार सहित एवं आकार में दोहराये जायें। छात्रों के मुखपाठ होने चाहिये। स्वरलिपि एवं हस्तसंकेतों का भी उपयोग किया जाय।

पाठ १२

ताल

पहले पाठ १ मे मात्रा एक विशिष्ट कालावधि के अर्थ में समझाई गई है। वह मात्रा एक सेकंड के बराबर बतायी गई है। स्वर, आकार अथवा गीत के अक्षरों की कालावधि नापने का प्रमाण मात्रा है पर मात्रा का अवकाश इच्छानुसार एक, आधा, चौथाई, डेढ़, दो, तीन, चार सेकंड तक छोटा लम्बा रक्खा जा सकता है और उसके फलस्वरुप गायन द्रुत, मध्य अथवा विलंबित गति में हो जाता है। गायन की गति को लय कहते हैं। अतएव द्रुत (जल्द) मध्य (न बहुत जल्द न बहुत धीरे) एवं विलंबित (बहुत धीरे) ये लय के (गायन की गति के) ही प्रकार हैं। एक बार १, ½, ¼, २ अथवा ३ सेकंड इत्यादि में से किसी एक के बराबर मात्रा निश्चित करने पर फिर उससे घटा बढ़ा नहीं सकते।

ताल मात्राओं का बना हुआ होता है। हर एक ताल की मात्रा-संख्या निश्चित होती है, कोई ताल ६ कोई ८ मात्रा कोई १२ और कोई १६ मात्राओं का भी होता है।

ताल की मात्राओं मे से कुछ मात्राएँ हथेलियों से ताली बजा कर दिखाई जाती हैं। इन तालियों की संख्या हर एक ताल मे निश्चित होती है। किसी ताल मे एक, किसी मे दो किसी मे तीन किसी मे चार इत्यादि तालियों की संख्या तालों मे बँधी हुई होती हैं। जैसे तालियों से कुछ मात्राय दिखायी जाती हैं। उसी प्रकार हथेली अलग हटा कर भी कुछ मात्राएँ दिखाई जाती हैं। इस प्रकार हथेली अलग हटाने को खाली कहते हैं। इस प्रकार ताल कुछ तालियो और कुछ खालियों से बताया जाता है। जिन मात्राओं पर कोई ताली अथवा खाली न हो वे वैसे ही उंगलियों से हथेली पर अथवा वैसे ही मन ही मे गिनी जाती हैं।

किसी भी ताल की सम से पहली ताली को सम कहते हैं क्यों कि गीत का पहला टुकड़ा जो पुन पुन. दोहराया जाता है उसी पर आ कर समाप्त होता है।

ताल मे बजने वाली तालियों को कभी. भरी भी कहते हैं।

अब किसी एक ताल का उदाहरण लेंगे। हमारे संगीत मे सब से अधिक व्यवहार मे आने वाला ताल त्रिताल है।

त्रिताल

त्रिताल सोलह मात्राओं का होता है। उसमे तीन तालियाँ एवं एक खाली होती है। किसी भी ताल को सम का चिन्ह × यह होता है। उसके पश्चात जितनी तालियाँ होंगी उनके लिये क्रमश २,३,४ इत्यादि क्रमांक लिखे जाते हैं। खाली का चिन्ह एक शून्य लिखकर दिया जाता है। त्रिताल का सम १ ली मात्रा पर २ री ताली ५ वीं मात्रा पर एवं ३ री ताली १३ वीं मात्रा पर होती हैं। ९ वीं मात्रा पर एक खाली भी होती है। इन नियमों के अनुसार त्रिताल इस प्रकार होता है।

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ताल	×				२				०				३			

अथवा

×
१६ १ २
१५ ३
१४ ४
३ १३ ५ २
१२ ६
११ ७
१० ९ ८
०
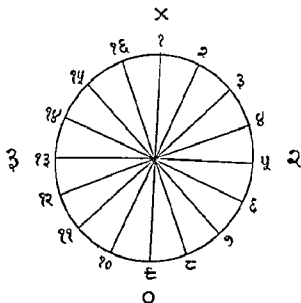
इस प्रकार १६ मात्रा पूरी हो जाने पर पुनश्च १, २, ३, इत्यादि १६ तक गिना जाता है।

ताल की मात्रा सख्या, उसमे आने वाली तालियाँ एवं खालीसहित एक चक्कर पूरा हो जाने पर उसको ताल का आवृत्त कहते हैं। ऊपर दिये हुए प्रकार से १६ मात्रा पूरी हो जाने पर त्रिताल का एक आवृत्त पूरा हुआ। गीत अथवा बाजे की गत ऐसे कई आवृत्तों से बंधी हुई होती है। यह नियम नहीं है कि बंधे हुए हर एक गीत को ताल के सम से ही आरम्भ किया जाय। ताल की किसी भी मात्रा से गीत की रचना का उठाव हो सकता है।

गाते हुए गायक के स्वयं ताल देने का व्यवहार हमारे यहाँ नहीं है। गीत का ताल तबलेपर, अथवा मृदंग पर तबलावादक अथवा मृदंग वादक बजाकर दिखाता है। कोई ताल तबलेपर जब बजाया जाता है तब उसको उस ताल का ठेका कहते हैं। यह ठेका ताल वाद्य पर निकलने वाले कुछ वर्णाक्षरों का बँधा हुआ होता है। हर एक ताल का अपना अपना ठेका स्वतंत्र होता है जिससे वह ताल पहचाना जाता है। त्रिताल का ठेका, अर्थात् तबले पर बजने वाले बोल, निम्नलिखित हैं:—

त्रिताल—मात्राताल व ठेका सहित

मात्रा—	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९१०११२	१३१४१५१६
ठेका—	धा धि धि धि	धा धि धि धा	धा नि नि नि	ता धि धि धा
ताल—	×	२	०	३

अब कुछ शब्द त्रिताल में कुछ स्वरों के साथ अभ्यास के लिये गाएं —

[१]

सा सा सा सा	री – री री	ग म री ग	म प – प
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२

प प – प	ध ध नि नि	सां – सां रीं	सां – – सां
प ति ऽ त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२

मां सां सां नि	ध – प ग	ध – म –	ग –'– ग
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	ग ऽ ऽ म
०	३	×	२
ग री – री	ग म प प	म ग री –	सा – – सा
प ति ऽ त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२

[२]

सा मा सा मा	री – री री	री ग म प	म ग री री
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
री प – प	म ग म म	ग री ग री	मा – – सा
प ति ऽ त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
मा प प प	प ध ध ध	प – म –	ग री – री
र घु प ति	रा ऽ घ व	रा ऽ जा ऽ	रा ऽ ऽ म
०	३	×	२
री ग – ग	म – म म	ग री मा गी	सा – – सा
प ति – त	पा ऽ व न	सी ऽ ता ऽ	रा ऽ ऽ म

पाठ १३

स्थान

सां, रीं, गं इत्यादि स्वर ऊँची आवाज में गाये जाते हैं तब उनको तार सप्तक के स्वर कहते हैं।

अब सा से नीची आवाज में भी स्वर गाये जाते हैं जिनको मन्द्र सप्तक के स्वर कहते हैं। और इन स्वरों के नीचे एक बिन्दी देकर लिखते हैं। हस्त संकेत में इन स्वरों को हाथ नीचा कर के दिखाते हैं। जैसे :--

स्वर लिपि मुद्रा
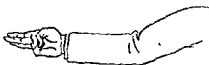
(१) न बहुत ऊँची न बहुत नीची आवाज में जिसमें साधारण बात चीत की जाती है वह मध्य सप्तक अथवा मध्य स्थान कहा जाता

है। मध्य स्थान के शुद्ध स्वरों को कोई चिन्ह नहीं होता है। वे वैसे ही लिखे जाते हैं। जैसे सा, री, ग, म, प, ध, नि।

(२) मध्य सप्तक से नीची आवाज में जब ये ही स्वर गाये जाते हैं तब उनको मन्द्र स्थान अथवा मन्द्र सप्तक के स्वर कहा जाता है। इन स्वरों के नीचे बिन्दी दी जाती है। जैसे :—

नि़, ध़, प़, म़, ग़, ऱी सा़।

(३) मध्य सप्तक से ऊँची आवाज में गाये जाने वाले स्वरोंको तार स्थान अथवा तार सप्तक के स्वर कहा जाता है। ये स्वर ऊपर एक बिन्दी दे कर लिखे जाते हैं। जैसे:—

सां रीं गं मं पं धं निं

अब इन तीनों स्थनों के स्वर एक साथ लिखेंगे:—

मन्द्र सप्तक— सा़ ऱी ग़ म़ प़ ध़ नि़

मध्य सप्तक— सा री ग म प ध नि

तार सप्तक— सां रीं गं मं पं धं निं

अब ताल में बँधी हुई एक सरगम एवं कुछ गाने बिलावल राग के गाएंगे।

पाठ १४

बिलावल राग

बिलावल राग में सब शुद्ध स्वर लगते हैं। हम लोग जो स्वर गाते चले आये हैं वे सब शुद्ध स्वर ही हैं। बिलावल में ये सब के सब स्वर गाते हैं अतएव इसको सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं। बिलावल में धैवत पर सब स्वरों से अधिक ठहरा जाता है एवं उसको सबसे अधिक

प्रमाण मे गाया जाता है। अतएव, उसको इस राग का वादी स्वर कहते हैं। धैवत का सहायक (मददगार) जो धैवत के अतिरिक्त और सब स्वरों से अधिक प्रमाण में गाया जाता है, गंधार है। वह इस राग का संवादी अर्थात वादी से संवाद (नाता, मित्रता स्नेह) रखने वाला स्वर माना जाता है। शेष सब स्वर अर्थात सा रे म प एवं नि ये इस राग मे अनुवादी अर्थात अनुचर (धैवत—गंधार के साथ साथ चलकर उनकी शोभा बढ़ाने वाले) स्वर माने जाते हैं। बिलावल राग दिन के प्रथम प्रहर मे सूर्योदय के बाद गाया जाता है। आरोह में मध्यम कम गाया जाता है।

आरोहः— सारे ग म गरे, ग प, धनिसां

अवरोहः— सांनिधप, ध, मग, मरेसा

रागवाचक स्वर समुदाय —सा, ग म ग रे, गप, धनि, धनिसां।

इस राग का उठाव इस प्रकार होगाः—

सारेग रेसा, गम गरे, गप, धनि, ध, निसां।

सांनिधप, ध, मग, मपमग, मगरेसा।

राग की बढ़त इस प्रकार होगी —

सा, गरेसा, सारेग, मगरे, गमप, मग, ध, प, ध, मग, मपमग, मरे सा।

सा, प, ध, प, ध, मग, रीगप, धनिध, निसां, धप, सां निधप, मपमग, रीगमप, मग, गरीसा।

सा, मग, मगरी, गप, मग, ध, मग, मपधप, मग, रीगपधनिसां, धप, ध, मग, पमगरेसा।

पप, धनिध, निसां, सांरींसां, धनिसांरींसां, धप, गंरींसां, पपधनिसां, धप, मप, मग, ध, धनिप, धनिसां, धपमग, पमग, गरीसा ।

(सूचना:—इस प्रकार विलावल के अलाप छात्रों से गवाये जांये ताकि उनके चित्त में राग का स्वरूप ठीक पक्का हो जाये ।)

पाठ १५

विलावल-त्रिताल (मध्य-लय)

सरगम

स्थायी

म ग रे ग	प नि ध नि	सां – – रें	सां नि ध प
०	३	×	२
ध नि सां नि	ध प म ग	म प म ग	म ग री सा
०	३	×	२
गं रें सां नि	ध नि सां रें	सां नि ध प	म ग रे सा
०	३	×	२

अंतरा

प म ग रे	ग प ध नि	सां – ध नि	सां – –
०	३	×	२

सां रें मं रें	सां नि ध नि	रें – सां नि	ध प म ग
०	३	×	२
प – म ग	रे सा, ध –	ध नि – नि	सां नि ध प
०	३	×	२

पाठ १६

लक्षण गीत विलावल—त्रिताल (मध्य लय)

गीत के शब्द

स्थायी

शुचिसुर मण्डित सपूरन, जब होत विलावल
शुद्ध कहावत, अंश गहत धैवत गंधार
सहायक राग रूप अति सुंदर

अंतरा

उत्तर अंग प्रबल करि सुस्वर
प्रातगेय कलियाण कहे कोऊ
विविध विलावल भेद म को पुनि
आश्रय होत सुजान मनोहर

बिलावल स्थायी

ग म ग री	नि़ रे सा सा	ग रे ग म	प म ग ग
शु चि सु र	मं ऽ हि त	सं ऽ पू ऽ	र न ज ब
ध — ध प	धनिध नि सां	सां नि ध प	म ग म रे
हो ऽ त बि	ला ऽऽ व ल	शु ऽ द्ध क	हा ऽ व त
ग म प म	ग री सा –	ग री ग प	नि ध नि रीं
श्रं ऽ श ग	ह त धै ऽ	व त गं ऽ	धा ऽ र स
सां नि ध प	धनि सां ध प	म ग म री	सा री सा सा
हा ऽ य क	राऽ ऽ ग रू	ऽ प अ ति	सुं ऽ द र

अंतरा

प — ध (नि) नि	सां – सां सां	सां मां सां सां	सां रीं सां सां
उ ऽ त्त र	श्रं ऽ ग प्र	व ल क रि	सु ऽ म्व र

सां रीं गं रीं	— सां ध नि	सां — ध प	म प म ग
आ ऽ त गे	ऽ य क लि	या ऽ ण क	है ऽ ओ ऊ
ग म ध ध	ध नि प प	नि ध नि रीं	सां नि ध प
वि वि ध वि	ला ऽ व ल	मे ऽ द न	को ऽ पु नि
सां नि ध प	म ग म री	ग म प म	ग री सा सा
आ ऽ श्र य	हो ऽ त सु	जा ऽ न म	नो ऽ र

पाठ १७

चौताल

चौताल में १२ मात्राएं होती हैं। १ली, ५वीं, ६वीं एवं ११वीं मात्राओं पर तालियाँ होती हैं। ३ री एव ७ वीं मात्राओं पर खाली होती है। इस प्रकार चार ताली तथा दो खाली चौताल में होती है।

चौताल मृदंग (पखावज] पर बजाया जाता है। इस ताल में गाये जाने वाले सब गीत ध्रुवपद अथवा ध्रुपद कहलाते हैं। चौताल यूँ लिखा जाता है।

मात्रा	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२
मृदंग के बोल	धा धा	दिं ता	किट धा	दिं ता	तिट कत	गदि गिन
ताल	×	०	२	०	३	४

इस ठेके में कुछ मात्राओं पर दो अक्षर मिलकर एक बोल आता है। जैसे किट, तिट, कत, गदि गिन। इनमें से एक एक अक्षर आधी मात्रा का अर्थात आधे सेकण्ड का है। एक मात्रा में एक से अधिक अक्षर अथवा स्वर आते हों तो वे नीचे एक ‿ ऐसी ऊँधी कमान दे कर लिखे जाते हैं।

जैसेः— सारी सारीग सारीगम संनिधपम मपमगरीसा इत्यादि।

इस कमानी के अन्दर आने वाले सब स्वर समान अवकाश के होते हैं।

दो स्वर एक कमानी में हों तो ये आधी मात्रा का, एक एक, ऐसे होते हैं, तीन हों तो तिहाई मात्रा का एक एक ऐसे, चार हों तो पाव मात्रा का एक एक ऐसे, इत्यादि प्रकार इन स्वरों के अवकाश की गिनती होती है।

(सूचनाः—ऐसे मात्राओं के विभागों के स्वर पाठ छात्रों से दोहराये जांय।)

पाठ १८

ध्रुवपद बिलावल—चौताल विलंबित

गीत के शब्द

शीत शीत मंद मंद प्रात समय बहे समीर
उपवन की शोभा न्यारी निरखि निरखि हुलसत मन ।
कोमल रवि किरनन सों पूर्व प्रकाश भयो
अखिल जगत जागि उठ्यो गावत जय जय शुभ दिन ॥
निकसि आये कोटर तें मधुर शब्द किये विहग
द्रुमवेली झूम रहे दिनमणि की जय जय करि ॥
सरसन मों खिले कमल चहूँ ओर भयो विकास
सजि सिंगार सृष्टि भई, मानो जैसि नई दुलहन ॥

बिलावल चौताल

ग	म	रे	ग	प	प	नि	ध	नि	सां	—	सां
शी	ऽ	त	शी	ऽ	त	मं	ऽ	द	मं	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

सां	—	सां	सां	ध	प	ध	म	ग	म	रे	सा
प्रा	ऽ	त	स	मे	ऽ	ब	हे	स	मी	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सा रे | ग म | ग रे | ग प | प नि | ध नि
उ प | य न | की ऽ | शो ऽ | मा न्या | ऽ रि
× ० २ ० ३ ४
सा रें | गं रें | सां रें | सां नि | ध प | ध म
नि र | खि नि | र खि | हु ल | स त | म न
× ० २ ० ३ ४
अंतरा
प — | नि ध | नि नि | सां मां | सां सां | सां —
को ऽ | म ल | र वि | कि र | न न | सों ऽ
× ० २ ० ३ ४
सां — | रें गं | सां सां | सां नि | ध प | म ग
पू ऽ | र ब | प र | का ऽ | श भ | यो ऽ
× ० २ ० ३ ४
नि
म ग | रे सा | रे सा | ग प | ध नि | सां —
अ खि | ल ज | ग त | जा ऽ | गि उ | ठयो ऽ
× ० २ ० ३ ४

सां	—	रें	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	ध	म
ग	ऽ	व	त	जै	ऽ	जै	ऽ	शु	भ	दि	न
×		०		२		०		३		४	

संचारी

सा	सा	सा	ध	—	ध	ध	—	ध	नि	प	—
नि	क	सि	आ	ऽ	ये	को	ऽ	ढ	र	तें	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प	प	प	नि	ध	नि	सां	ध	प	म	ग	ग
भ	धु	र	श	ऽ	ब्द	कि	ये	ऽ	वि	हृ	ग
×		०		२		०		३		४	

म	ग	री	ग	म	प	म	ग	म	री	सा	—
द्रु	म	ऽ	वे	ऽ	लि	भू	ऽ	म	र	हे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	सा	प	प	निध	नि	सा	नि	ध	प	म	ग
दि	न	म	णि	की	ऽ	जै	ऽ	जै	ऽ	क	री
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प	प	नि	ध	नि	—	सां	गां	—	गां	सां	सां
स	रे	स	न	मों	ऽ	खि	ले	ऽ	क	म	ल
×		×		२		०		३		४	
सां	रें	गं	रें	—	सां	सां	नि	ध	प	म	ग
च	हुँ	ऽ	ओ	ऽ	र	भ	यो	वि	का	ऽ	स
×		०		३		०		२		४	
म	ग	रे	सा	रे	सा	ग	प	नि ध	नि	सां	—
स	ज	सिं	गा	ऽ	र	सु	ऽ	दि	भ	ई	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	—	रें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	प	ध	म
मा	ऽ	नो	ढ़ै	ऽ	सि	न	ई	दु	ल	हि	न

पाठ १६

विकृत स्वर

विलावल में लगने वाले सात शुद्ध स्वरों में से पाँच अर्थात् री, ग, म, ध, नि की दो दो अवस्थाएँ होती हैं, एक नीची एवं दूसरी ऊँची।

बिलावल के रे ग ध नि ऊँचे होते हैं, मध्यम नीचा होता है। सा और प को एक एक ही अवस्था होती है और इस लिये ये दो स्वर अचल स्वर कहलाते हैं। इस प्रकार बिलावल में सा, री, ग ऊँचे, म नीचा, प, और ध नि ऊँचे यह स्वर लगते हैं और इनको शुद्ध स्वर कहते हैं। री ग ध नि ये स्वर अपने शुद्ध स्थान से कुछ नीचे हटते हैं तब कोमल कहलाते हैं। कोमल स्वर नीचे एक आड़ी रेखा देकर लिखते हैं, जैसे—

री = कोमल री   ग = कोमल ग

ध = कोमल ध   नि = कोमल नि

मध्यम अपने स्थान से ऊपर बढ़ता है तब तीव्र कहलाता है। तीव्र म ऊपर एक ऊर्ध्व रेखा दे कर लिखा जाता है जैसे:—

म—तीव्र म

री ग ध नि कोमल एवं म तीव्र ये स्वर विकृत कहलाते हैं। विकृत का अर्थ बदला हुवा, अपने मूल स्थान से हटा हुवा। शुद्ध रे ग ध नि अपने मूल स्थान से नीचे हट कर कोमल होते हैं। और शुद्ध मध्यम अपने स्थान से ऊपर बढ़ कर तीव्र होता है सब ये सब स्वर विकृत कहलाते हैं।

हस्त संकेत मे कोमल स्वर शुद्ध स्वरों की मुद्राओं को ही नीचे की ओर मोड़कर दिखाया जाता है। जैसे—

नाम   स्वरलिपि   हस्तसंकेत

कोमल री =   री =

कोमल ग = ग॒ =

कोमल ध = ध॒ =

कोमल नि = नि॒ =

तीव्र म शुद्ध म की मुद्रा को ऊपर उठा कर दिखाया जाता है। जैसे:—

नाम स्वरलिपि मुद्रा

तीव्र म = म॑ =

पाठ २०

तीव्र म साधन

जैसा कि पिछले पाठ में बताया गया है हमारी संगीत प्रणाली में मध्यमस्वर की दो अवस्थाएँ हैं। एक नीची और दूसरी ऊँची। नीचे मध्यम को शुद्ध मध्यम कहते हैं जो शुद्ध सप्तक अर्थात् बिलावल के सप्तक में आही गया है।

अब इस पाठ में तीव्र मध्यम का साधन करना है। पंचम से तीव्र मध्यम उतना ही नीचा है जैसे षड्ज से शुद्ध निषाद। अर्थात यदि 'प' को थोड़े समय के लिये 'सा' कह के गाया जाय और इस नये 'सां' से उसका 'नि' गाया जाय तो ठीक उसी स्थान पर तीव्र मध्यम होगा।

(सूचनाः—छात्रों से प्रथम "सांनि" गवाया जाय। फिर पंचम गवाया जाय और उसी को थोड़े समय के लिये सा कहलाकर उसका नी गवाया जाय। इस प्रकार दोनो अर्थात मूल "सांनि" एवं नये माने हुवे "सांनि" एक के पश्चात दूसरा ऐसे गवाया जाय। फिर नये माने हुवे "सांनि" को "पम॑" करके कहलाया जाय।)

अब कुछ स्वर समुदाय तीव्र मध्यम साधन के लिये गावें।

१. सां, नि, — प म॑

२. सां, नि, ध — प म॑ ग

३. सां, नि, ध, प — प म॑ ग रे

४. सां नि सां — प म॑ प

५. ध नि सां — ग मं प

६. सां रें सां नि — प ध प मं

७. गं रें सां नि — नि ध प मं

८. प ध नि सां — रे ग मं प

९. प, ध नि रें, सां — रे, ग मं ध, प

१०. रेगमं, प प ध नि, सां

११. सां, नि ध प, प, मंगरे

सूचनाः—ऊपर दिये हुए स्वर समुदाय एक-एक पुन-पुनः गवा कर पर्याप्त रटाये जाँय। तीव्र मध्यम ठीक स्थान पर छात्रों के गले से निकलने पर सीधे आरोह-अवरोह तीव्र मध्यम लेते हुवे पूरे सप्तक के गवाये जाँय जैसेः—

सा, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां

सां नि, ध, प, मं, ग, रे, सा

अब कुछ स्वर समुदाय शुद्ध मध्यम के एवं कुछ तीव्र मध्यम के गावें जिससे इन दोनों मध्यमों के नाद स्थान और उनका आपस का भेद ध्यान में आ जाय।

१. प, म॑   प म

२. ध प म॑   ध प म

३. स रे ग, म॑, प   सारे ग, म, प

४. सा, प, म॑, ग   सा, प, म, ग

५. रेग म॑, प   रेग म, प

६. सांनि ध प म॑   सां नि ध प म

७. सा, म प   सा, म, प

८. सा रे सा, म, गम॑, प, ध प म

९. ग प, म॑ ध, म॑प, म, सा रे, सा

१० सा, रे, ग, म,   प, ध, नि सां

सां नि, ध प,   म, ग रे सा

सा, रे, ग, म॑,   प, ध, नि, सां

सां, नि, ध, प, म॑,   ग, रे, सा

पाठ २१

राग यमन, ठाठ कल्याण

यमन राग में तीव्र मध्यम एवं शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं, जैसे:—

सा, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां।

सां नि, ध, प, मं, ग, रे, सा॥

इस स्वर सप्तक को कल्याण मेल अथवा कल्याण थाट कहते हैं। यमन राग का भी यही स्वर सप्तक होने के कारण कल्याण ठाठ को कभी कभी यमन ठाठ भी कहते हैं। और यमन को इस ठाठ से उत्पन्न होने वाला राग कहते हैं। यमन राग सर्व प्रसिद्ध और लोक प्रिय राग है। यमन का वादी स्वर गंधार है। अतएव वह स्वर सब से अधिक गाया जाता है एवं उस पर न्यास भी होता है। संवादी स्वर निषाद है। वादी स्वर से पंचम पर और सब स्वरों से प्रबल स्वर निषाद है। शेष सब स्वर अनुवादी हैं। कभी कभी यमन में शुद्ध मध्यम भी विवादी के नाते लगाया जाता है। वह दो गंधारों के बीच में लगाया जाता है। जैसे नि धप, मंग, रेगमंप, मं, गमगरे, ग, रे, सा। यमन रात्रि के प्रथम प्रहर में अर्थात् सूर्यास्त के पश्चात् गाया जाता है। पंचम ऋषभ की संगत प रे करके इसमें बहुत आती है। मन्द्र, मध्य, तार तीनों स्थानों में इस राग का विस्तार होता है। राग गम्भीर प्रकृति का है। मींड़, विलम्वित आलाप के योग्य है। यमन के अंतरे का आरम्भ "मंगपधपसां" ऐसे होता है, न "पधनिसां" न "मंध निसां" से।

आरोहः सारेगमं पधनि सां। अवरोहः सां निधपमं गरेसा।

पकड़—राग वाचक स्वर समुदाय ग रे स, नि़, रे, ग, रे, सा।

स्वर विस्तार

१—ग,रे, ऩिरे, सा, ऩिधऩि, रे, सा ।

२—ऩि,रे, ग, रे, धऩि, रे ग, म म, ग,रेग, ऩिरेगम प,रे, सा

३—ग, रे, सा, ऩिरेगम, ग प, प, रे मग, रेगमप, म, ग, निरेगमप, रे, सा

४—नि रे ग म प मग, प, मधप, प, (प) मग, रेग मधप, मग, परे, ऩिरेसा

५—सा, ऩि, ध, प, ऩिध, ऩिरे, सा, प, रे, सा, ऩिगरे, मपधप, म, ग, ध, पमग, रेग, पमग, प, रे, सा ।

६—प, मग, प, ध, प, मधनि, धनि, धप, गमपध निधप, म ग, रेग, मप, ऩिरे गम निधप मग, प, रे, गमप, प, रे ग रे, ऩिरे, सा ।

७—मग, मधनि, धनि, गमपधनि, रेग मधनि, निधप, पधपमग, धपमग, पमग, रेग, मप, रे, सा ।

८—मग, पधप, सां, सां, निरें, सां, निरेंगंरेंसां, निध,

निरेंसां, निध निधप, मपधनिमां, प, रे, निरेंगमं
धपमंगरे, गमंप, रे, सा

पाठ २२

यमन--त्रिताल (मध्यलय)

नि ध प मं	ग रे सा सा	ग – ग रे	ग मं प ध
०	३	×	२
प मं ग रे	ग मं प मं	ग रे सा –	ध़ नि़ रे ग
०	३	×	२
मं प ग मं	प ध नि सां	मं प ध नि	रें सां नि ध
०	३	×	२

अंतरा

प मं ग प	– प नि ध	सां – – –	सां रें सां –
०	३	×	२
नि रें गं रें	सां – ध नि	ध – – रें	सां नि ध प
०	३	×	२
मं प ध नि	सां – नि ध	प मं ग रे	ग मं प ध
०	३	×	२

पाठ २३

लक्षण गीत यमन—त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

सब सुर तीव्र मेल मिलायो , तामें अंश गंधार नि सहचर ।
परि सुरसंगत अंग मनोहर ॥

प्रथम प्रहर निशि गाय गुनीवर, होवे कल्याण ऐमन सुजान ।
रागन में राग एक आश्रय संपूर्ण, अतगंभीर मधुर ॥

यमन

नि ध प मं	ग री सा सा	ग — ग री	ग मंग मं प
स ब सु र	ती ऽव र	में ऽ ल मि	ला ऽऽ यो ऽ
०	३	×	२
प मं ग री	सा — सा सा	नि़ ध़ नि़ सा	नि़ ध़ प़ प़
ता ऽ में ऽ	अं ऽ श गं	धा ऽ र नि	स ह च र
०	३	×	२
नि़ नि़ री री	ग मंग मं प	प री ग री	नि़ री सा सा
प रि सु र	सं ऽऽ ग त	अं ऽ ग म	नो ऽ ह र
०	३	×	२

अंतरा १

प मं ग प	– प नि ध	सां – सां सां	सां रें सां मां
वि पु ल धा	ऽ न्य फ ल	मू ऽ ल प	रि ऽ प्लु त
०	०	×	२

नि – नि ध	सां – सां सां	नि रें सां निध	नि ध प प
पु ऽ ष्प सु	गं ऽ धि त	उ प व नऽ	शो ऽ भि त
०	३	×	२

नि ध प ध	प मं ग रे	ग प – रे	मा रें सा सा
अ ग न ग	सा ऽ ग र	स रि ऽ त्स	रो ऽ व र
०	३	×	२

नि – रे रे	ग मं ग मं मं	प – प ध	नि ध प प
र ऽ चि त	पो ऽऽ पि त	को ऽ ट को	ऽ ट ज न
०	३	×	२

ग ध प म	री – सा –	ग – ग रे	ग मंग मं प
अ त ही ऽ	प्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा २

प प प॑म॑ ग	प - नि ध	सां - सां सां	— रें — सां
ल लि तऽ क	ला ऽ अ रु	ण्या ऽ न ध्या	ऽ न व ल
०	३	×	२
नि - नि ध	नि सां सां सां	नि रें सां निध	नि ध प प
स ऽ म्य सु	मं ऽ स्कृ त	न र ना ऽऽ	री ऽ ज न
०	३	×	२
प - ^मग म॑	प प प प	ध नि ध प	रे - सा सा
जु ऽ द्ध कु	श ल र ण	वी ऽ र धु	रं ऽ ध र
०	३	×	२
नि - रे रे	^मग म॑ग म॑ म॑	प - प ध	नि ध प प
शा ऽ स न	का ऽऽ र्यं प्र	ग ऽ ल्भ मं	ऽ त्रि यु त
०	३	×	२
ग ध प म॑	रे - स -	म - ग रे	ग म॑ग म॑ -
ज ग मे ऽ	न्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा

प प म॑ ग	प प नि ध	सां – सां सां	^(नि)सां रीं सां सां
प्र थ म प्र	हृ र नि स	गा ऽ ये गु	नी ऽ व र
०	३	×	२
नि – नि निध	सां – – सां	सां रीं गं रीं	सां नि ध प
हो ऽ वें कुऽ	ल्या ऽ ऽ न	ऐ ऽ म न	सु जा ऽ न
०	३	×	२
प – म॑ ग	प – नि –	ध सां – सां	सां रीं सां नि
रा ऽ ग न	मो ऽ रा ऽ	ग ए ऽ क	आ ऽ श्र य
०	३	×	२
ध प म॑ ग	री सा नि़ री	^(म॑)ग मग ^(प)म प	प ध प प
सं ऽ पू ऽ	र न श्र त	गं ऽऽ भी ऽ	र म धु र
०	३	×	२

पाठ २४

भारत गीत यमन-त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

जय जय भारत देश हमारा, नमन प्रथम करि मंगल गावै,
दशदिशि कीर्ति जस उजियारा, जगमों न्यारा देश हमारा।

विपुल धान्य फल मूल परिप्लुत, पुष्प सुगंधित उपवन शोभित
अग नग सागर सरित् सरोवर, रचित पोषित कोटि कोटि जन
अति ही प्यारा देश हमारा।

ललित कला अरु ज्ञान ध्यान बल, सभ्य सुसंस्कृत नर नारी जन
युद्ध कुशल रणवीर धुरंधर, शासन कार्य अगल्भ मंत्रियुत
जगमों न्यारा देश हमारा ॥

प मं ग रे	नि रे सा सा	ग – ग रे	ग मंग मं प
जै ऽ जै ऽ	भा ऽ र त	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२
मं ध नि ध	प ध प मं	ग रे ग रे	सा रे(नि) सा –
न म न प्र	थ म क रि	मं ऽ ग ल	गा ऽ वैं ऽ
०	३	×	२
सा रे ग मं	प ध नि रें	सां नि ध प	मं ग रे प
द स दि स	की ऽ र त	ज स उ जि	या ऽ रा ऽ
०	३	×	×
मं ध प –	रे – सा –	ग – ग रे	ग मंग मं प
ज ग मों ऽ	न्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा १

प मं ग प	– प नि ध	सां – सां सां	सां रें सां सां
वि पु ल धा	ऽ न्य फ ल	मू ऽ ल प	रि ऽ प्लु त
०	०	×	२
नि – नि ध	सां – सां सां	नि रें सां निध	नि ध प प
पु ऽ ष्प सु	गं ऽ धि त	उ प व नऽ	शो ऽ भि त
०	३	×	२
नि ध प ध	प मं ग रे	ग प – रे	सा रे सा सा
अ ग न ग	सा ऽ ग र	स रि ऽ त्स	रो ऽ व र
०	३	×	२
नि – रे रे	ग मं ग मं मं	प – प ध	नि ध प प
र ऽ ञ्जि त	पो ऽऽ पि त	को ऽ ट को	ऽ ट ज न
०	३	×	२
ग ध प म	री – सा –	ग – ग रे	ग मंग मं प
अ त ही ऽ	प्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

अंतरा-२

प प पम ग	प - नि ध	सां - सां सां	— रें - सां
ल लि तऽ क	ला ऽ अ रु	ण्या ऽ न ध्या	ऽ न ब ल
०	३	×	२
नि - नि ध	नि सां सां सां	नि रें सां निध	नि ध प प
स ऽ भ्य सु	मं ऽ स्कृ त	न र ना ऽऽ	री ऽ ज न
०	३	×	२
प - मग म	प प प प	ध नि ध प	रे - सा सा
जु ऽ द्ध कु	श ल र ण	वी ऽ र भु	रं ऽ ध र
०	३	×	२
नि - रे रे	ग मग म म	प - प ध	नि ध प प
शा ऽ स न	का ऽऽ र्य प्र	ग ऽ ल्भ मं	ऽ त्रि यु त
०	३	×	२
ग ध प म	रे - स -	म - ग रे	ग मग म -
ज ग में ऽ	न्या ऽ रा ऽ	दे ऽ श ह	मा ऽऽ रा ऽ
०	३	×	२

पाठ २५

ध्रुवपद यमन–चौताल (विलंबित)

गीत के शब्द

आद नाद ब्रह्म नाद अनाहत ओंकार प्रणव जाको जोगी ध्यान करत पावत सत्चिदानंद ।
हरिमुख तें आहत निकस्यो मधुर मुरलिनाद, यातें अखिल चराचर पायो परम सुख आनन्द ॥
उदात्त अरु अनुदात्त स्वरित लिये तीन भेद, जामें पढ़त वेद मंत्र मार्ग रीत आहत नाद ।
ताहि सों सप्त सुर देशी रीत मों प्रमाण, प्रगट नाम रूप सों, षड़ज ऋषभ गंधार मध्यम पंचम धैवत निषाद शुचि विकृत भेद ॥

ग	–	रे	नि़	रे	सा	ग	–	रे	ग	म॑	रे
आ	ऽ	द	ना	ऽ	द	ब्र	ऽ	ह्म	ना	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

प	ध	प	म॑	ग	रे	ग	प	रे	नि	रे	सा
अ	न	ह	द	ओं	ऽ	का	ऽ	र	प्र	ण	व
×		०		२		०		३		४	

नि़	–	ध़	नि़	रे	रे	ग	मग	मं	प	प	प
जा	ऽ	को	जो	ऽ	गी	ध्या	ऽऽ	न	क	र	त
×		०		२		०		३		४	
मं	–	ध	नि	प	रे	ग	रे	–	नि़	रे	सा
पा	ऽ	व	त	स	त	चि	दा	ऽ	नं	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

मं	ग	प	प	नि	ध	सां	–	–	सां	–	सां
ह	रि	मु	ख	तें	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ह	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	ध	नि	रें	रें	सां	सां	निध	नि	ध	प
नि	क	स्यो	म	धु	र	मु	र	लिऽ	ना	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	
गं	–	रें	नि	रें	सां	सां	नि	ध	नि	ध	प
या	ऽ	ते	अ	खि	ल	च	रा	ऽ	च	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

मंचारी

आभोग

नि	—	नि	नि	—	ध	सां	—	सां	सां	—	सां
वा	S	हि	सों	S	S	स	S	प्त	सू	S	र
×		०		२		०		३		४	
नि	—	रें	गं	रें	सां	सां	निध	नि	ध	—	प
दे	S	शी	री	S	त	मों	SS	प्र	मा	S	न
×		०		२		०		३		४	
गं	रें	सां	नि	ध	प	रे	ग	रे	सा	—	—
प्र	ग	ट	ना	S	म	रू	S	प	सों	S	S
×		०		२		०		३		४	
सा	सा	सा	रे	रे	रे	ग	—	—	ग	—	ग
ख	र	ज	रि	ख	व	गं	S	S	धा	S	र
×		०		२		०		३		४	
म॑	—	म॑	म॑	प	—	प	प	ध	—	ध	ध
मु	S	ध्य	म	पं	S	च	म	धैं	S	व	त
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	-	नि	सां	नि	ध	प	म॑	ग	रे	सा
नि	पा	ऽ	द	शु	चि	वि	कृ	त	मे	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	

पाठ २६

राग भूपाली

राग भूपाली कल्याण ठाठ से उत्पन्न होता है। उसमें मध्यम एवं निपाद, ये दो स्वर वर्जित हैं। सा रे ग प ध ये पाँच स्वर लगते हैं। पाँच स्वरों का राग है इसलिये यह एक औड़व जाति का राग कहलाता है।

भूपाली का वादी स्वर गंधार है और संवादी स्वर धैवत है। अर्थात् गंधार स्वर सबसे प्रबल एवं धैवत स्वर गंधार से से कम, पर शेप सब स्वरों से प्रबल है। शेप स्वर अर्थात् पड्ज, ऋपभ एवं पंचम अनुवादी स्वर हैं।

भूपाली राग रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।

आरोहः— सा रे ग प ध सां ॥

अवरोहः— सां ध प ग रे सा ॥

पकड़ः— ग, रे, सा, रे ध़, सारेप, ग, धपग, रेग, रेसा।

स्वर विस्तार

१. ग, रे, सा, रेध्, सारेप, ग, धपग, रेग, रेसा ।

 रे सा

२. सा, रे, सा, (सा) रे, ध्, सा, प् ध्, सा, प्ध्सारेग, रेग, धपग, रेग, रेसा ।

३. सारेगपग, रेगरेपग, धपग, सारेग, ध्, सारेग, धपग,

 सा

सारे, ध् सा, ग, रे, ध् सा, प ध्, सा ।

४. सारेगपध, पग, रेगध, पग, ध् सारेग, ध, पग, पगग, रेग, सारे, रेध्सा ।

 सा

५. गरेसा, धपगरेसा, प्ध्सा, गरेपग, साध्सारेग, पग, गपरेग, सारेसाग, ध्ग, सारेग, रे, ध्, सा ।

६. सारेगप, रेगप, रेध्, सारेप, ग, धपग, गपधसां, धपग, रेगपधसां, धपग, गपसांधसां, धपग, रेग, सारेगपध सां, धपग, ध, पग, रेग, रे, सा ।

७. गग, प, सां, ध, सां, सां, रेंसां, सांध, सांरें, सांध, गरें, धसां, पधसां, धपग, रेगपधसां, धपग, रेगधपग, रेग, रेसा ।

८. सां धसां, पसां, धसां, रें, धसां, पधसांरेंगं, रें, धसां, गं, गंरेंगं, सांरेंगंपंगं, रेंग, धसांरें, धगं, गंरेंसां, पधसां, धपसां, धपग, रेग, सारेगपधसां, धपगरेसा ।

पाठ २७

भूपाली-त्रिताल

ग ग रे ग	ग रे सा रे	प — ग —	ध प ग —
०	३	×	२
ग प ध सां	— ध प ग	रे — ग प	ध रें सां —
०	३	×	२
प ध मां रें	गं — ध रें	— ध सां —	प ध सां —
०	३	×	२
ध प ग ध	प ग रे ग	सा रे ग रे	सा ध़ सा रे
०	३	×	२

अंतरा

ध प ग रे	सा – सां ध	सां — — —	रें ध सां —
०	३	×	२
ध सां रें गं	— ध रें —	ध सां — प	सां — ध प
०	३	×	२
ग रे सा ध़	प़ ध़ सा रे	ग — प ध	सां — ध प
०	३	×	२

ग	ध	प	ग	रे	सा	रे	ग	सा	रे	ग	रे	सा	ध़	सा	रे
०				३				×				२			

पाठ २८

लक्षण गीत भूपाली—त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

तजत मनि सुर मेल कल्याण स ई अंश गंधार संवदत्र धैवत निशि प्रथम प्रहर रीझत सब जन ।
औड़व जाति सुलक्षण सुन्दर, भोपाली कहे रूप मनोहर भूप नाम कलियाण कहे कोऊ, गायक गुणि प्रिय अति मन मोहन ।

राग भूपाली—त्रिताल

								रीं				प			
–	सां	ध	प	ग	री	सा	री	प	ग	ग	रे	ग	प	ध	सां
ऽ	त	ज	त	म	नि	सु	र	मे	ऽ	ल	क	ल्या	ऽ	न	सौं
०				३				×				२			
ध	ग	ग	री	ग	प	ध	सां	ध	सां	ध	प	ग	री	सा	सा
ऽ	अं	श	गं	धा	ऽ	र	सं	ऽ	व	द	त	धै	ऽ	व	त
०				३				×				२			

सां रीं गं रीं	सां रीं सां ध	सां – ध प	ग री सा सा
नि शि प्र थ	म प्र ह र	री ऽ झ त	स घ ज न
०	३	×	×

अंतरा

ग – ग ग	प – सां ध	सां – सां सां	सां रीं सां सां
औ ऽ ढ़ य	जा ऽ त ; सु	ल ऽ च्छ न	सुं ऽ द र
०	३	×	२
सां – ध –	सां – रीं रीं	सां रीं गं रीं	सां रीं सां ध
मो ऽ पा ऽ	ली ऽ क ह	रू ऽ प म	नो ऽ ह र
०	३	×	२
ग – प सां	ध सां ध प	ग – ध प	ग री सा सा
भू ऽ प ना	ऽ म क लि	या ऽ न क	हे ऽ को ऊ
०	३	×	२
सां – गं रीं	सां सां प ध	सां सां ध प	ग रे सा सा
गा ऽ य क	गु णि प्रि य	अ त म न	मो ऽ ह न
०	३	×	२

पाठ २६

बाँसुरी गीत भूपाली—त्रिताल

गीत के शब्द

मुरली मन मोहत मोहन तुम्हरी मुरली बजाये जाओ
गोविंद गोपाल गोपी वल्लभ ।
या बाँसुरी में मगन भये सुर, भये मुग्ध मुनि लीन भये नर ।
बिसरि सबै कछु सुध बुध तनकी, मनकी लगन लगी हरि के चरन ॥

भूपाली

गरे	सा – – रे	ध मा मा रे	ग ग रे ग	ध प ग रे
मुर	ली ऽ ऽ म	न मो ह त	मो ह न तु	म्ह री मु र
	०	३	×	२

सा – – सां	ध प ग ध	प ग रे ग	प ध सां प
ली ऽ ऽ ब	जा ऽ ये मु	ना ऽ ये जा	ऽ वो ऽ गो
०	३	×	२

धसां रेंगं रें सां	पध सारें सां ध	गप धसां – ग	ध प ग रे
विऽ ऽऽ द गो	पाऽ ऽऽ ल गो	पीऽ ऽऽ ऽ व	ल्ल भ मु र
०	३	×	२

अंतरा

प – ग –	प प सां ध	सां सां सां सां	सां रें सां सां
या ऽ वाँ ऽ	सु रि मों ऽ	म ग न भ	ये ऽ सु र
०	३	×	२
सां सां ध सां	– सां रें रें	सां रें गं रें	सां रें सां ध
भ ये ऽ मू	ऽ ग्घ मु नि	ली ऽ न भ	ये ऽ न र
०	३	×	×
रे ग प ध	सां – ध प	ग ग ध प	ग रे सा –
थि स रि स	वै ऽ क छु	सु ध बु ध	त न की ऽ
०	३	×	२
सा रे ग प	रे ग प ध	ग प ध सां	ध प ग री
म न की ल	ग न ल गी	ह रि के च	र न सु र
०	३	×	२

पाठ ३०

ध्रुवपद—भूपाली—चौताल (विलंबित)

गीत के शब्द

आदनमन सत्य को भूत दया दूजो नमन ,
तापर जन्म भूमि पद नमन कीजो सुजान ।
विश्व प्रेम को नमन दीन दुखीजन सकल ,
दुःख हरन व्रत को नमो २ सदा चरण ॥
स्वार्थार्पण को वार वार वंदन ,
जासो होवे इक छिन मो पाप मूल खंडन ।
दीन धरम को अधार मनुज धरम को ,
सार पालन किये होत, दुख द्वन्द भंजन ॥

भूपाली—चौताल

ग	—	री	सा	सा	री	ग	—	ग	ग	—	री
आ	ऽ	द	न	म	न	स	ऽ	त्य	को	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	—	ग	ध	प	—	ग	री	ग	री	सा	सा
भू	ऽ	त	द	या	ऽ	दू	ऽ	जो	न	म	न
×		०		२		०		३		४	

ग	–	ग	री	ग	प	(गा) ध	मां	–	सां	गां	सां
ता	ऽ	प	र	ज	ऽ	न्म	भू	ऽ	मि	प	द
×		०		२		०		३		४	

सां	रीं	गं	रीं	सां	ध	सां	ध	प	ग	री	सा
न	म	न	की	ऽ	जो	सु	जा	ऽ	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	ग	ग	प	सां	ध	सां	–	–	सां	सां	सां
वि	ऽ	श्व	प्रे	ऽ	म	को	ऽ	ऽ	न	म	न
×		०		२		०		३		४	

सां	ध	ध	सां	सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	सां	ध
दी	ऽ	न	दू	खी	ऽ	य	न	ऽ	स	क	ल
×		०		२		०		३		४	

सां	–	गं	रीं	सां	सां	रीं	सां	–	ध	प	ग
दु	ऽ	ख़	ह	र	न	व्र	त	ऽ	को	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प		सां									
री	ग	प	ध	सां	—	सां	ध	प	ग	रे	सा
न	मो	ऽ	न	मों	ऽ	स	दा	ऽ	च	र	न
×		०		२		०		३		४	

संचारी

प	ग	ग	प	—	प	ध	ध	—	प	—	ग
स्वा	ऽ	र	था	ऽ	र	प	न	ऽ	को	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प		सा									
ग	—	प	ध	सां	सां	सां	ध	—	प	ग	ग
चा	ऽ	र	बा	ऽ	र	यं	ऽ	ऽ	द	ऽ	ना
×		०		२		०		३		४	

ग	—	ग	ग	ध	प	ग	री	सा	री	सा	—
जा	ऽ	सो	हो	ऽ	वे	इ	क	छि	न	मों	ऽ
×		०		२		०		३		४	

			प		सा						
सा	—	री	ग	प	ध	रीं	सां	—	ध	प	ग
पा	ऽ	प	मू	ऽ	ल	खं	ऽ	ऽ	ड	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प	ग	ग	प	सां	ध	सां	—	सां	सां	—	सां
दी	ऽ	न	ध	र	म	को:		अ	घा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	ध	सां	रीं	रीं	सां	रीं	सां	ध	प	ग
म	नु	ज	ध	र	म	को	ऽ	ऽ	सा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
सां	गं	रीं	गं	—	रीं	सां	रीं	ध	सां	—	सां
था	ऽ	ऽ	ल	ऽ	न	कि	ये	ऽ	हो	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
प	सा ध	रीं	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	री	सा
दु	ख	ऽ	द्वं	ऽ	द	भ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

पाठ ३१

कोमल निषाद

निषाद स्वर अपने स्थान से नीचे हटता है तब उसको कोमल निषाद कहते हैं। शुद्ध निषाद की ही मुद्रा नीचे की ओर मोड़ के कोमल निषाद होता है।

नाम	स्वर लिपि	मुद्रा
कोमल नि	नि	

(१) सा, पम, सां नि

(२) सा, गम, धनि

(३) सा, गम, गरे, धनिधप

(४) सा, धपम, रेंसांनि

(५) सारेगम, मपधनि

(६) सा, पमगरे, सांनिधप

(७) सा, गमप, धनि सां

(८) सागमप, मधनिसां

(९) सामग, मनिध

(१०) सांनिध, पमग, रेसा

(११) सा, पमग, सांनिध

(१२) सारे गम पधनिसां

सूचना—इत्यादि स्वर समुदायों को फलक पर लिखकर एवं मुद्राओं से काम लेते हुए दोहराया जाय।

शुद्ध नि एवं कोमल नि :

(१) सांनि, सां – नि –

(२) सांनि, धप ; सा – नि – धप

(३) मपधनि ; मपधनि

(४) सारेग, पधनि ; रेगम, पधनि

(५) सांनि, सां, नि, धनि, धनि ; पधनि, पधनि ;

रेंसांनि, रेंसांनि,

सारेगमपधनि, सारेगमपधनि

सांनि, धप मगरेसा ; सांनि, धपगरेसा ।

पाठ ३२

राग खमाज, ठाठ खमाज

खमाज रागमें कोमल निषाद एवं शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं, जैसे

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां ।

सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा ॥

इस स्वर सप्तक को खमाज मेल अथवा खमाज थाठ कहते हैं।

खमाज राग मे आरोह में शुद्ध निषाद भी लगाया जाता है। खमाज राग का वादी स्वर गंधार है। अर्थात् इस स्वर को सबसे अधिक लिया जाता है एव उस पर ठहरते भी हैं। इस राग का संवादी स्वर अर्थात् गंधार से कम पर शेप सब स्वरों से अधिक प्रबल ऐसा स्वर निषाद है। शेप सब स्वर अनुवादी अर्थात् वादी स्वर के तथा संवादी स्वर के साथ साथ (आगे पीछे) चलने वाले स्वर होते हैं।

खमाज रात्रि के प्रथम प्रहर अर्थात् ९ बजे रात्रि मे गाया जाता है। यह राग बहुत मधुर है। इसमें कोमलता है। अतएव छोटे छोटे, कोमल अर्थभाव के गीत इसमे बहुत होते हैं। यह राग भजन, स्तुतिगीत, ठुमरी, इत्यादि के लिये योग्य है।

इस राग के आरोह मे ऋषभ स्वर दुर्बल होता है। लगभग वर्ज्यहि किया जाता है। खमाज मे मुरकिया, खटके, तान, पर्याप्त प्रमाण मे ली जाती है।

आरोहः—सा,ग, मप, धनि सां।

अवरोहः—सां निधप मगरेसा॥

पकड—ग, सा, गमप, गम, निध, मधप, मग प म गरे सा।

स्वर विस्तार

१. सा, ग, मप, ध, मग, मगरेसा।

२. निसा, ग, मगरेसा, निसारेसा, निध, पधपसा, निध, प नि, सा, साग, मग, रेसा।

३. नि साग, मग, मपध, मग, गमपधनिध, मग, सागमध पध, मग, प, गमगरेसा।

४. निध, मपध, मग, गमपधपमं, निध, मपध, मग, निसागमपसां, नि, ध, मपनिध, मपध, मग, धपमगरेसा।

५. मनि धनि पध मपध, मग, गमपनि, सांरेंसां, निध, गमपनिध, मग, सांनिधपमग, गमप गमगरेसा।

६. प, सागमप, धप, नि, ध, प, सांरेंसां, निधप, मपधप, निध, मपध, गमग, सांरेंसांनिधपमगरेसा।

७. मग, मनिध, निसां, निसां, पनि, सांरेंसां, निध, निरेंसां, निध, गमपधनिसां, निध, गं, मंगंरेंसां, निध, मपनिध, मग, पमगमगरे सा।

८. गमपनि, निसां, पनिसांरेंसां, मंगंरेंसां, रेंसांनिध, मपसां, निध, गमपध, मग, सांनिधा, मगरेसा।

पाठ ३३

राग खमाज—सरगम—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा ग – म	प ध – म़	ग – – म	ग रे सा –
०	३	×	२
नि़ सा ग म	प ध ग म	प नि़ सां रें	सां नि॒ ध प
०	३	×	२
नि॒ ध प म	प ध – म	ग – प म	ग रे सा –
०	३	×	२

अंतरा

म ग म नि॒	ध प ध नि	सां – नि नि	सां – – मं
०	३	×	२
गं रें सां –	प नि सां रें	सां नि॒ ध प	– म ग म
०	३	×	२
ध प सां –	प ध – म	ग – – म	ग रे सा –
०	३	×	

पाठ ३४

लक्षण गीत, खमाज–त्रिताल

गीत के शब्द

सुजन अब राग खमाज सुनो, मृदु निषाद और सब शुचि सुर जामें लगाय गायो गंधार अंश करि सप्तम सुर संवादि मनायो। प्रथम प्रहर निशि रूप मनोहर, ललित प्रकृति अति सुस्वर सुन्दर रीझत जासों नर नारी जन, कवि कुल रसिक प्रेम रस पायो।

नि॒	ध ध (प)म ग	ग म प ध	नि – सां नि	सां नि सा रें
सु	ज न अ ब	रा ऽ ग ख	मा ऽ ज सु	नो ऽ मृ दु
	०	३	×	२

सां नि॒ ध प	ग म प ध	ग म ग ग	सा ग रे सा
नि षा ऽ द	औ र स ब	शु चि सु र	जा ऽ मे ल
०	३	×	२

नि़ सा सा ग	— म प ध	ग म ग नि॒	ध नि॒ प ध
गा ऽ य गा	ऽ यो गां ऽ	धा ऽ र अं	– शं क रि
०	३	×	२

नि -- सां सां	नि ध प प	ग म प ध	ग म ग
स ऽ ब म	सु र स म	धा ऽ दि म	ना ऽ यो
०	३	×	२

अंतरा

म ग नि नि	प ध नि नि	सां – सां नि	सां – सां सां
प्र थ म प्र	ह र नि स	रू ऽ प म	नो ऽ ह र
०	३	×	२

प नि सां मं	गं गं नि सां	नि – सां रें	सां (सां) नि ध
ल लि त प्र	कृ ति श्र त	सु ऽ स्व र	सुं ऽ द र
०	३	×	२

ग म प सां	नि -- ध --	प म म प ध	म -- ग ग
री ऽ भ त	ला ऽ सों ऽ	न र ना ऽ	(री) ऽ ज न
०	३	×	२

नि सा ग म	प ध नि सां	नि ध प ध	ग म ग –
क वि कु ल	र सि क प्रे	ऽ म र स	पा ऽ यो ऽ
०	३	×	२

पाठ ३५

खमाज—झपताल

गीत के शब्द

कदम्ब की छैया ठाढ़े कन्हैया ;
साँवरी सलोनी सूरत मन भावनी।
मुकुट माथे सोहै मकर कुंडल कान ,
नेह भरी नैन ज्योति चित लुभावनी ॥
पीतांबर काछे गरे वैजयंती निरखि ,
मन लज्यो मदन, मूर्ति मन मोहनी ।
अधर धरि माधुरी मुरली बजै सजै ,
रूप मिलि रागिणी अति ही रिझावनी ॥

स्थायी

म	ग	म	प	ध	नि	सां	सां	–	–
क	दं	ब	की	ऽ	छैं	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
नि	धम	प	–	प	(ध)प	ध	म	–	
ठा	ऽऽ	ढ़े	ऽ	क	न्है	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

नि	—	सां	नि	सां	(सां)	—	नि	ध	प
सां	ऽ	च	. री	स	लो	ऽ	नी	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

ग	म	प	सां	नि	ध	प	ध	प म	ग
सू	र	त	म	न	भा	ऽ	व	नी	ऽ
×		२			०		३		

अंतरा

म	ग	म	नि	ध	नि	सां	सां	—	सां
मु	क	ट	मा	ऽ	थे	ऽ	सो	ऽ	है
×		२			०		३		

नि	नि	नि	सां	नि	सां	(सां)	नि	ध	प
म	क	र	कुं	ऽ	ड	ल	का	ऽ	न
×		२			०		३		

नि	धप	ध	नि	रें सां	नि	धप	म	ग	—
नैं	ऽऽ	इ	भ	री	नैं	ऽऽ	न	ज्यो	ऽ
×		२			०		३		

म			सां		प				
ग	गम	प	नि	ध	म	प	ध	(म)	ग
ती	ऽऽ	चि	त	छु	भा	ऽ	व	नी	ऽ
×		२			०		३		

संचारी

ग		म	ग	म	प	प	प	—	प
पी	ऽ	तां	ऽ	ऽ	ब	र	का	ऽ	छे
×		२			०		३		

ग	प	ध	सां	नि	धप	ध	प	म	ग —
ग	र	वै	ऽ	ज	यंऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

प	म	ग	रे	सा	नि़	सा	ग	ग	ग
नि	र	खि	म	न	ल	ज्यो	म	द	न
×		२			०		३		

ग	म	प	ध	सां	नि	धप	नि	ध	प
मू	र	त	म	न	मो	ऽऽ	ह	नी	ऽ
×		२			०		३		

आभोग

म	ग	म	नि॒	ध	नि	सां	नि	सां	–
अ	ध	र	ध	रि	मा	ऽ	धु	री	ऽ
×		२			०		३		
प	नि	सां	–	रें	सां	(नि) सां	नि॒	ध	–
मु	र	ली	ऽ	व	जै	ऽ	म	जै	ऽ
×		२			०		३		
ग	म	ध	नि॒	(रें) सां	नि॒	धप	ध	प	–
रु	ऽ	प	मि	लि	रा	ऽऽ	ग	नी	ऽ
×		२			०		३		
ग	म	प	सां	नि॒	धप	ध	म	ग	–
अ	त	ही	ऽ	रि	झा	ऽ	व	नी	ऽ
×		२			०		३		

पाठ ३६

ध्रुवपद–खमाज–चौताल (विलंबित)

गीत के शब्द

जमना के नीर तीर रास रच्यो है,
गोप गोपी जन संग खेले कन्हैया।
मुरली की धुन पर नाचत आनंद भरे,
गोकुल गाँव के गोपी ग्वाल गैया।
झाँझ मृदंग डफकिनरी बजे मधुर,
पैजन की झनकार परम सुखदैया।
ताथेइ थेइ तत्, आथेइ थेइ तत्,
थेइ ताथेइ ताथेइ थेइ थेइ तततायैया।

खमाज–चौताल

									प		
ग	ग	सा	ग	–	म	प	–	ध	म	ग	म
ज	मु	ऽ	ना	ऽ	के	नी	ऽ	र	ती	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

प	सां	नि	ध	म	म	प	ध	–	म	ग	–
रा	ऽ	ऽ	स	ऽ	र	च्यो	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि	—	नि	सां	—	रीं	सां	नि	सां	नि̲	ध	प
गो	ऽ	प	गो	ऽ	पी	य	न	ऽ	सं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	

ध	सां	—	नि̲	ध	(प)म	प	ध	—	म	ग	—
खे	ऽ	ऽ	ले	ऽ	क	न्हैं	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	ग	म	नि̲	ध	नि	सां	सां	नि	सां	—	सां
मु	र	ऽ	ली	ऽ	कि	धु	न	ऽ	प	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

नि	—	—	सां	—	रीं	सां	नि	सां	नि̲	—	ध
ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	त	आ	नं	द	भ	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	

म	ग	सा	ग	—	म	प	—	ध	सां	रीं	गं
गो	ऽ	ऽ	कू	ऽ	ल	गाँ	ऽ	व	के	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(८६)
सां ऽ | नि ध | – म | प ध | – . म | ग –
गो ऽ | प ग्वा | ऽ ल | छै ऽ | ऽ या | ऽ ऽ
× ० २ ३ ४
संचारी
सा — | — ग | — ग | म — | म म | ग म
झां ऽ | ऽ झ | ऽ मृ | दं ऽ | ग ढ | ऽ प
× ० २ ० ३ ४
प प | नि ध | — म | प ध | — म | ग ग
कि न | ऽ री | ऽ य | जे ऽ | ऽ म | धु र
× ० २ ० ३ ४
नि ध | नि ध | प ध | सां नि | सां नि | ध प
पैं ज | ऽ नि | ऽ कि | झ न | ऽ का | ऽ र
× ० २ ० ३ ४
— म | ग सा | ग ग | म — | — प | — —
ऽ प | र म | सु ख | दै ऽ | ऽ या | ऽ ऽ
× ० १ ० ३ ४

आभोग

नि	—	—	सां	—	नि	सां	सां	नि	सां	सां	सां
ता	ऽ	ऽ	थे	ऽ	इ	थे	ई	ऽ	ऽ	त	त
×		०		२		०		३		४	
नि	—	—	सां	—	मं	गं	सां	नि	सां	नि	ध
आ	ऽ	ऽ	थे	ऽ	इ	थे	इ	ऽ	ऽ	त	त
×		०		२		०		३		४	
मं	ग	म	नि	(नि)ध	नि	प	ध	नि	नि	सां	सां
थे	इ	ता	थे	इ	ता	थे	इ	थे	इ	थे	इ
×		०		२		०		३		४	
रें	सां	—	नि	ध	म	(ध)प	—	ध	म	(प)म	ग
त	ऽ	ऽ	त्त	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ	थै	ऽ	था
×		०		२		०		३		४	

पाठ ३७

कोमल ग

गंधार जब अपने स्थान से नीचे हटता है तब कोमल गंधार अथवा कोमल ग कहलाता है।

नाम	स्वरलिपि	मुद्रा
कोमल ग	ग	

शुद्ध गांधार की ही मुद्रा नीचे की ओर मोड़कर कोमल गांधार की मुद्रा होती है।

कोमल ग साधन

(१) सा, रेग, मग।

(२) रेग, रेग, मप।

(३) सारेग, रेगम; पधनि, धनिसां।

(४) सांनि, धप, मग, रेसा।

(५) सांनि, ध, मग, रे, मगरेसा।

(६) रेग मप, धनिसांरें।

(७) रेंसांनिधप, पमगरेसा ।

(८) सारेग, म, पधनि, सां सांरेंगं ।

(९) गंरेंसां, निधप, म, गरेसा ।

(१०) सा, ग; सां, गं, रें सां ।

(११) रें, निध; प, ग रे ।

(१२) गंरेंसां, निधप, गरेसा ।

(१३) सारेग, रेग, मप मप ।

(१४) पमग रेगम गरेसा ।

(१५) सा, सारे, रेग, गम, मप ।

(१६) प, पम, मग, गरे, रेसा ।

(१७) सारेगम पधनिसां ।

(१८) सांनिधप मगरेसा ।

शुद्ध गंधार एवं कोमल गंधार के तुलनात्मक स्वर समुदाय

शुद्ध गंधार	कोमल गंधार
(१) सा, ग	सा, रे ग

(२) मग .... प म ग ......

(३) गमपमग रेग मगरे

(४) मग, मग,

(५) पमग, पमग,

(६) मग, रेसा मग, रेसा

पाठ ३८

राग काफी—ठाठ काफी

काफी राग में कोमल गंधार एवं कोमल निषाद, शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

जैसे—

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां ।

सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा ॥

यह स्वर सप्तक काफी मेल अथवा काफी ठाठ कहलाता है। काफी राग, जो एक अति लोकप्रिय राग है इसी ठाठ से उत्पन्न होता है इसलिये इस ठाठ को काफी ठाठ कहते हैं।

काफी राग का वादी स्वर पंचम, संवादी स्वर ऋषभ है। अतएव पंचम सबसे अधिक प्रबल स्वर है जिस पर ठहरा जाता है एवं जो

सबसे अधिक लिया जाता है। ऋषभ संवादी है। पंचम से कम पर शेष सब स्वरों से अधिक प्रबल है। शेष सब स्वर अनुवादी, वादी संवादी की शोभा बढ़ाने वाले स्वर हैं। काफी राग में कभी कभी शुद्ध निषाद भी आरोह में लगाया जाता है।

काफी राग का गान समय रात्रिका द्वितीय प्रहर है। यह राग कोमल प्रकृति का है। इस राग में होली नाम के गीत विशेष अधिक गाये जाते हैं। भजन, प्रार्थनादि गीतों के योग्य राग है। ठुमरी दादरे भी इस राग में बहुत हैं।

इस राग में सब स्वर आरोह अवरोह में लगते हैं, अतएव इसको संपूर्ण जाति का राग माना जाता है। सरल तान पलटों के लिये बहुत सीधा, पर उतना ही मधुर राग है।

आरोहः—सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

अवरोहः—सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा॥

पकड़—सा सा रे रे ग, म म प।

स्वर विस्तार

(१) सा, रेग, रेसारेप, मपध, मप, गरे, मगरेसा।

(२) सा, निस, रे, ग, म, गमप, धपमप, मपधमप, ग, रे, रेप, मप, मगरेसानि, सारेग, रेसारेप।

(३) प, मप, रेगम, गमप, निधप, सांनिधप, धमप, ग, रे, मग, रे, सा ।

(४) मगरेसा, निधपधनि, सा, निसारे, रेग, रेम, गप, मध, प, गरे, गमपधनिधप, मपनिधपध, मप, गरे, रेंनिधनि पधमप, गरे, पमगरे, मगरेसा, निसारेग, ममप

(५) निधनि, धप, सां, निधप, सांरेंसांनिधप, ममपध, निधप, धमपध, गरे, रें, सांनिधपमगरेसा ।

(६) सागरेमगपमधपनिधसां, मंगंरेंसांनिधमपधगरे, पमपमगरेसा ।

(७) मम, पधनि, सां, धनिमां गंरें, मंगंरेंसां, निसांरें, नि, ध प, मपसां, निधप, गमपधनिनसांनिधप, निधपमगरेसा ।

(८) धनिसां, मपधनिमां, धरें, गंरें, निसांरेंधनिसां, पधनि, मपधमगरे, मगरेसा ।

पाठ ३६

सरगम काफी—त्रिताल

स्थायी

सा रे ग रे	ग म प म	प – प म	ग रे सा नि
०	३	×	२
सा रे ग म	प ध नि ध	प म ध प	म प म ग
०	३	×	२
रे म ग रे	सा – सां –	नि ध प म	ग रे सा नि
०	३	×	२

अंतरा

नि ध प म	म प – ध	नि – सां –	नि नि सां –
०	३	×	२
ध नि सां रें	गं रें सां रें	सां नि ध प	म ग रे सा
	३	×	२

नि सा – सा	रे – रे ग	– ग म –	म प – प
०	३	×	२

ध – ध नि	– नि सां –	नि ध प म	ग रे सा नि
०	३	×	२

पाठ ४०

लक्षणगीत—काफी—त्रिताल

गीत के शब्द

सुन सुलच्छनी काफी रागनी को, मृदु गमनी स्वर मेल मिलावत
परि संवादि करत नित सुंदर ।

संपूर्ण कर चढ़ते नि तीव्र, प्रथम प्रहर निशि गावत सुस्वर
काफी धनाश्री मलार सारंग कान्हर, पंच अंग राग मधुर,
उपजत जासों ऐसी मनोहर ॥

काफी त्रिताल

– सा सा री	(म)ग – म म	प – प ध	म प ग –
ऽ सु न सु	ल ऽ च्छ नि	का ऽ फि रा	ऽ ग नी ऽ
०	३	×	२

	ध प	ग ध	
री नि ध नि	प ध म प	म — म प	ग — री री
को मृ दु ग	म नि सु र	मे ऽ ल मि	ला ऽ व त
०	३	×	२
री ग री ग	सा रे नि सा	रे ग म प	ग — री री
प रि स म	वा ऽ द क	र त नि त	सुं ऽ द र
०	३	×	

अंतरा

म — प ध	नि नि सां सां	नि नि सां नि	सांरीं निध प
सं ऽ पू ऽ	र न क र	च ढ़ ते नि	तीऽ ऽ च र
०	३	×	२
म प सां नि	ध प म प	ग रे ग म	ग री सा सा
प्र थ म प	ह र नि शि	गा ऽ व त	सु ऽ स्व र
०	३	×	२
सा — री री	ग — म म	प — प ध	नि सां नि सां
का ऽ फि ध	ना ऽ श्री म	ला ऽ र सा	ऽ रं ऽ ग
०	३	×	२

नि	–	प	प	म	–	म	प	सां	नि	ध	प	म	प	ग	री
का	ऽ	न	र	पं	ऽ	च	श्रं	ऽ	ग	रा	ऽ	ग	म	धु	र
०				३				×				२			

री	ग	री	म	ग	री	सा	–	सां	–	नि	धप	ग	–	सा	री
उ	प	ज	त	जा	ऽ	सों	ऽ	ऐ	ऽ	सी	मऽ	नो	ऽ	ह	र
०				३				×				२			

पाठ ४१

फुलवारी, काफी—त्रिताल

गीत के शब्द

कैसि सजि है फुली फुलवारी प्यारी,
सरस सुगंधित रंग रंगीले फूल खिले हँसत करत सैन।
जुही गुलाब चमेली चम्पा, अपने अपने रूप गंध रस,
भेंट चढ़ावत सृष्टि देवि के, चरण कमल पर होवत लीन॥

री	नि	सा	री	री	ग (म)	ग	म	म	प	–	पध	निसां	निध	पम	गरे	सारे
कै	सि	स	जि	है	फु	ली	फु	ल	वा	ऽ	रीऽ	ऽऽ	प्याऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ
	०				३				×				२			

री प म प	म ग री सा	सां नि प ध	नि (सां) नि धप
स र स सु	गं ऽ धि त	रं ऽ ग रं	गी ऽ ले ऽऽ
०	३	×	२
प – पध मप	ग री नि ध	प म म प ग म	ग री सा री
फू ऽ लऽ खिऽ	ले ऽ हं स	त क र त	सैं ऽ न कै
०	३	×	२

अंतरा

– म प ध	नि – सां सां	सांरीं गं रीं सां	रीं नि सां –
ऽ जु हि गु	ला ऽ ब च	मेऽ ऽ ली ऽ	चं ऽ पा ऽ
०	३	×	२
नि नि नि –	सां नि सां (सां)	नि ध प म	– म प ध
अ प ने ऽ	अ प ने ऽ	रु ऽ प गं	ऽ ध र स
०	३	×	२
पध निसां नि ध	(म) – ग री	ग री ग री	सा री नि सा
अेंऽ ऽऽ ट च	ढा ऽ व त	सु ऽ ष्टि दे	ऽ वि के ऽ
	३	×	२

री ग म प	ध नि सां सां	नि ध म प	ग री सा री
च र ण क	म ल प र	हो ऽ व त	ली ऽ न वै
०	३	×	२

पाठ ४२

ध्रुवपद काफी—चौताल

गीत के शब्द

आद नाद जासों उपजत द्वाविंशति श्रुति,
श्रुतियन सों निकसत सुर सप्त शुद्ध पंच विकृत।
आरोहि अवरोहि स्थायी संचारि चतुर्वर्ण,
गान किये सुरन को सिंगार सजत॥
चौसठ अलंकार विविध राग रूप सजे,
संपूर्ण पाड़व औड़व हूँ कहे जात।
वादी संवादी अनुवादी कबहूँ विवादि,
चतुर्भेद स्वर मंडित रागन को गुनि वरनत॥

काफ़ी—चौताल

स्थायी

—	सा	री	सा	री	प	ग॒	म	ग॒	री	—
ऽ	द	ना	ऽ	द	ला	ऽ	ऽ	सों	ऽ	ऽ
	०		२		०		३		४	
ग॒	(री) सा	री	नि॒	सा	री	ग॒	म	म	प	प
प	ज	त	ह्रा	ऽ	विं	ऽ	श	ति	श्रु	ति
	०		२		०		३		४	
नि॒	धप	ध	नि॒	सां	नि॒	नि॒	ध	प	म	प
ति	यऽ	न	सों	ऽ	नि	क	स	त	सु	र
	०		२		०		३		४	
—	नि॒	ध	म	प	ग॒	—	रीसा	री	(सा) नि॒	सा
ऽ	स्न	श्रु	ऽ	द्द	पं	ऽ	चऽ	वि	कृ	त
	०		२		०		३		४	

अंतरा

—	—	प	—	ध	नि॒	सां	—	नि	सां	सां
ऽ	ऽ	रो	ऽ	हि	अ	व	ऽ	रो	ऽ	हि
	०		२		०		३		४	

रीं गं	रीं सां	रीं नि	सां –	– सां	रीं
स्था ऽ	ऽ थी	ऽ ऽ	सं ऽ	ऽ चा	ऽ
×	०	२	०	३	४

ध (प)म	प ग	री सा	नि सा	री री	ग
च तु	र व	र न	गा ऽ	न कि	ये
×	०	२	०	३	४

म म	प प	सां नि	ध प	म प	ग
सु र	न को	ऽ सिं	गा ऽ	र स	ज
×	०	२	०	३	४

संचारी

म –	– म	– म	प प	– ध	(ध)म
चौ ऽ	ऽ स	ऽ ठ	अ लं	ऽ का	ऽ
×	०	२	०	३	४

ग म	प ध	नि सां	नि ध	म प	(म)ग
वि वि	ध रा	ऽ ग	रू ऽ	प स	जे
×	०	२	०	३	४

(१०१)
री प | म प | म ग | री सा | — री | नि सा
सं ऽ | पू ऽ | र न | पा ऽ | ऽ इ | ऽ व
× ० २ ० ३ ४
री — | म ग ग | म — | प प | -- ध | ध म प
औ ऽ | इ व | हूँ ऽ | क हो | ऽ जा | ऽ त
× ० २ ० ३ ४
आभोग
नि — | नि — | नि — | सां -- | नि सां | सां सां
वा ऽ | दी ऽ | सं ऽ | वा ऽ | दी ऽ | अ नु
× ० २ ० ३ ४
रीं गं | रीं गं | रीं सां | रीं नि | -- सां | — सां
वा ऽ | दि क | व हुँ | वे ऽ | ऽ वा | ऽ दि
× ० २ ० ३ ४
नि नि | नि सां | — सां | सां रीं | नि ध | प प
च तु | र मे | ऽ द | स्व र | मं ऽ | डि त
× ० २ ० ३ ४

सां —	नि ध	^प^म —	प ध	^म^ग ग	री
रा ऽ	ग न	को ऽ	नु नि	च र	न
×	०	२	०	३	४

पाठ ४३

गीत के शब्द

जनम वृथा बिन पर उपकार ।
दीन दुखीयन को भरोसो तिहारो
तनिक देख ये हाल बेहाल ॥ १ ॥
धन दारा सुख चैन पसारा,
खेल जमायो निज स्वार्थ को ।
जीवन बिन पुरुषार्थ गँवायो,
तनिक सोच यह हाल बेहाल ॥ २ ॥

काफी—त्रिताल

स्थायी

म प ध प	ग — ^सा^रे रे	^म^ग ग म म	प — —
ज न म बि	र्था ऽ बि .न	प र उ प	का ऽ ऽ
२	०	३	×

रे म पध प	ग – रे रे (सा)	ग ग म म	प – प सां
ज न मऽ बि	र्था ऽ चि न	प र उ प	का ऽ र दी
२	०	३	×

नि (सां) नि ध	नि प ध नि	सां निसां नि धप	ग (म) – रे –
ऽ न दु खि	य न को भ	रों ऽऽ सों तिऽ	हा ऽ रो ऽ
२	०	३	×

ग रे ग रे	सा रे नि सा	रे ग म म	प – – प
त नि क दे	ऽ ख ये ऽ	हा ऽ ल बे	हा ऽ ऽ ल
२	०	३	×

अंतरा

नि नि नि –	सां – सां सां	सांरें गं रें सां	रें नि सां –
ध न हा ऽ	रा ऽ सु ख	चैंऽ ऽ न प	सा ऽ रा ऽ
२	०	३	×

नि – नि नि	सां – सां –	सां नि सां (सां)	नि ध प –
खे ऽ ल ज	मा ऽ यो ऽ	नि ज स्वा ऽ	र थ को ऽ
२	०	३	×

ध – ध ध	ध नि ध प	पध निसां नि सां	ध (_ ' ' प
जी ऽ व न	बि न प्र ह	खाऽ ऽऽ थं गं	चा ऽ वो ऽ
२	०	३	×

नि ध प ग (म)	– ग रे रे	रे ग म म	प – – प
त नि क सो	ऽ च य ह	द्दा ऽ ल बे	हा ऽ ऽ ल
२	०	३	×

पाठ ४४

काफी-त्रिताल

गीत के शब्द

कृष्ण कन्हैया तोरी बांसुरी की धुन सुन ।
मई .बावरी अत ब्रिज की ग्वारनि सब ।
भूल गइ सुध सबहु तन मन की ॥१॥
राग ताल रस रंग भरी है ।
मन मोहन नित मधुर सुरन सों ।
मति हरत सुरनरमुनिजनकी ॥२॥

काफी-त्रिताल

स्थायी

			म
ग रे ग	सा रे नि़ सा	रे म पध प	ग गरे सा सा
ऽ कृ ष्ण क	न्है या तो री	बां सु रीऽ की	धु नऽ सु नि
०	३	×	२

	ध		
नि ध नि	प ध म प	प सां नि (सां)	नि ध प प
ऽ भ इ या	व री अ त	ब्रि ज की ग्वा	र नि स ब
०	३	×	२

रे म प	ध नि सां प	ध म पध प	ग गरे सा –
ऽ भू ल ग	इ सु ध स	ब हु तऽ न	म नऽ की ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ध – ध नि	प ध म प	नि – सां नि	सां – सां –
रा ऽ ग ता	ऽ ल र स	रं ऽ ग भ	री ऽ है ऽ
०	३	×	२

प नि नि	सां सां सां सां	प नि सां रें	सां नि ध
ऽ म न मो	ह त नि त	म धु र गु	र न सों
०	३	×	२

सां नि सां	प निम प	रे म पध प	ग गरे सा -
ऽ म ति ह	र त मु र	न र मुऽ नि	ज नऽ की
०	३	×	२

पाठ ४५

राग-भीमपलासी

काफी ठाठ से ही उत्पन्न होनेवाला एक राग भीमपलासी है। अर्थात् इसमें कोमल गांधार एवं कोमल निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध होंगे। इस राग के आरोह में ऋषभ एवं धैवत नहीं लगते। अवरोह में तो सब स्वर लगते हैं। अतएव इसको ओडव संपूर्ण, अर्थात् आरोह में पांच स्वर एवं अवरोह में सातों स्वर लेनेवाला राग कहते हैं। गाने का समय दिन का ३ रा प्रहर है। मध्यम इस राग में वादी स्वर है। षड्ज संवादी है।

आरोहः—नि सागम पनि सां।

अवरोहः—सांनि धप मग रेसा।

(आरोह मन्द्र निषाद लेकर गाया जाता है।)

पकड़ः—नि सा, मग रे सा, नि पनि, सा, म, ग प म।

स्वर विस्तार

सा, नि, नि, सा, ग रे, सा, नि, पनि, सा, म, ग पम,

पग, म ग, रे, सा।

सा, म, म प म ग, पम, नि, साग पम, पनि धप, म प,

ग, साग मप, ग, मगरेसा।

सा, ग रे सा नि ध़ प़, नि पनि सा मग, ग म प म,

ग मपनि धप, मप, ग, म ग रे सा।

प, म, प, ग म, ग प, म, पनि धप, मप, ग पम,

नि सा ग मपग, मनिधप, मप, ग, मग रे सा।

निधप, मप नि, धप, सांनि धप, धपम, पग, पम,

ग म प सां, प, म, साग म, धप, ग, मग रेसा।

पमपग, मपनि, पनि सां सां, सां, नि सां,

नि सां गं रेंसां नि सां, निधप, मप सां, मंगं रें सां, निसां,

रेंसां, निधप, मप निधपग, मग रे सा।

पाठ ४६

सरगम भीमपलासी—त्रिताल

स्थायी

म ग रे सा। – म ग प। म – – नि। सा ग रे सा।
० ३ × २

नि सा, मग। म,प म प। नि ध प ग। – म प नि।
० ३ × २

सां – गं रें। सां, रें सां नि। ध प ग म। प सां – प।
० ३ × २

अंतरा

म	सा		
नि सा ग म ।	प नि — नि ।	सां — — नि ।	सां गं रें सां ।
०	३	×	२
सं गं रें सां ।	नि ध प ग ।	— म ग रे ।	सा — — सां ।
०	३	×	२
— सां प — ।	म ग — प ।	म — — नि ।	सा ग रे सा ।
०	३	×	२

पाठ ४७

भीमपलासी—एकताल

गीत के शब्द

मूरत मन भावनी, अतलगत नितध्यान
चित चहत दरस परस चरनन को ।
दिन चैनन निंदिया रैन सखि, कहियो जाय
संदेसवा मोरा इतनो अब श्याम सुंदर सों ।

स्थायी

सा नि	सा म	ग रे	सा —	सा नि	सा म	ग नि
मू	र त	म न	मा ऽ	व नी	ऽ अ	त, मू
	३	४	×	०	२	०

सा म	ग रे	सा —	सा नि	सा म	ग म
र त	म न	मा ऽ	य नी	ऽ श्र	त ल
३	४	×	०	२	०

प नि	ध प	म —	म ग	म प	नि सां
ग त	नि त	ध्या ऽ	न चि	त च	ह त
३	४	×	०	२	०

नि ध	प नि	सा ग	म प	ग रे	सा नि	सा म	ग न
द र	स प	र स	च र	न न	को मू	र त	म रे
३	४	×	०	२	०	३	४

अंतरा

म	म प	नि नि	सां सां	सां सां	सां सां	सां म
दि	न चै	न न	नि दि	या रै	न स	खि दि
	३	४	×	०	२	०

म प	नि नि	सां सां	सां सां	— सां	सां सां
न चै	न न	नि दि	या रै	ऽ न	स खि
३	४	×	०	२	०

सा			सा		म
नि सां	गं रें	सांसां सां	नि सां	नि ध	प ग
क हिं	यो जा	ऽयु सं	दे स	वा मो	रा इ
३	४	×	०	२	०

		नि		म	
म ग	रे सा	सा म	म म	ग प	म रें
त नो	अ ब	श्या ऽ	म सुं	द र	सों,जि
३	४	×	०	२	०

सा		प	म		सा	
नि सां	प नि	म प	ग म	ग रे	सा नि	सा म
या त	र से	तु म्ह	रे मि	ल न	को, मू	र त
३	४	×	०	२	०	३

पाठ ४८

राग बिंद्राबनी सारंग

बिंद्राबनी सारंग काफी ठाठ से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार तथा धैवत वर्ज्य हैं। अतएव यह औडव जाति का राग (पांच स्वर जिसमें लगते हैं ऐसा राग) कहलाता है। इसका वादी स्वर ऋषभ एवं संवादी स्वर पंचम है। गाने का समय ठीक दुपहर का है। यह एक अति गंभीर एवं स्वतंत्र स्वरूप का राग है। सारंग के बहुत प्रकार होते हैं, जिनमें से वृंदावनी अथवा बिंद्राबनी सारंग सबसे अधिक

प्रचार में एवं लोकप्रिय है। अतएव केवल सारंग कहने पर कभी-कभी यही विंद्रावनी सारंग समझा जाता है।

विंदरावनी सारंग के आरोह में शुद्ध निषाद लगाया जाता है।

इस राग में मींड अधिक लेने से और उसके आसपास के रागों की की छाया उस पर पड़ती है। अतएव मींड अधिक न लेनी चाहिए। थोड़ा सा धैवत का प्रयोग अवरोह में किया जाता है।

आरोहः—सा रे म प निसां।

अवरोहः—सां नि पमरे सा।

पकड़ः—सा, रेमप, पम रे, सा, निसा, निसारे।

स्वरविस्तार

(१) सा, रे, पमरे, सा, निसा, निसारे, रेम, रेमप, मरे, सा।

(२) सा, रे, मरे, नि, सा, पनिसा, निसारे, सारेमरे, रेप, मरे, नि, निसा, रे, सा।

(३) सा, रेमरेसा, निप, नि, सा, पनिसारे, मरे, रेमरेपमरे, म, रे, पम रे, नि, सा।

(४) निसा, रे, म, मप, निप, मपानसां, निप, रेमपनिप, निसांरेंसां, निप, मपसां, पनिप, रेमपनि, मपमनिप, रेमप, पमरे, मरे, नि सा ।

(५) म, मप, निप, नि, सां, निसां, मपनिसां, रें, सां, निसां, पनिप, रेमपनिसां, रेंसां निप, मपनिनिपमरे, रेमपसां, निप, रें, रेंमंरेंसां, रेंसां, निप, मपनि, पमरे, रेपमरे, नि, सा ।

(६) मपनिसां, निसां, पनिसां, निसांरें, रेंमंरें, रेंपं, मंरें, रेंमं रेंसां, निसांरें, सांनिपमरे, रेमपनिमप, रे, मरे, नि, सा।

पाठ ४६

सरगम बिंद्राबनी सारंग—झपताल

स्थायी

रे	म	रे सा —	नि प	नि सा —
×		२	०	३

रे म ×	प नि प २	रे रे ०	सा — सा ३
नि सा ×	रे म रे २	म प ०	नि प — ३
नि सां ×	रें — सां २	नि प ०	रे — सा ३

अंतरा

म म ×	प नि प २	नि नि ०	सां — सां ३
रें मं ×	रें सां — २	रें सां ०	नि — प ३
प रें ×	सां सां रें २	नि सां ०	म प नि ३
रे म ×	प नि सां २	नि प ०	रे — सा ३

पाठ ५०

लक्षणगीत विंद्रावनी सारंग-त्रिताल

गीत के शब्द

हर प्रिय मेल जनित बिंद्रावन, सारंग नाम अधग औड़व कर
दिन दुपहरिया मों नित गावत ।
अंश ऋषभ पंचम संवादी, आरोहन सप्तम सुर तीव्र
धैवत अल्प प्रयोग विछ्रभ सजे, सुन हो सुजान चतुर
मुनि संमत ।

स्थायी

(म) नि नि प पम	री – सा सा	(म) री री म म	प – प प
ह र प्रि यऽ	मे ऽ ल ज	नि त बिं द	रा ऽ व न
०	३	×	२
सां – नि प	री – म म	पनि नि प म	री री सा सा
सा ऽ रं ग	ना ऽ म अ	धऽ ग औ ऽ	ड़ व क र
०	३	×	२
प़ प़ नि़ सा	री सा रीम पनि	प म प पम	री – सा सा
दि न दु प	ह रि याऽ ऽऽ	में ऽ नि तऽ	गा ऽ व त
०	३	×	२

अंतरा

म – प प	नि प नि –	सां सां सां सां	नि सां सां –
श्रं ऽ श रि	ख व पं ऽ	च म स म	वा ऽ दी ऽ
०	३	×	२

नि – नि –	सां सां मां –	नि सां रें सां	नि – प प
श्रा ऽ रो ऽ	ह न स ऽ	स म सु र	ती ऽ व र
०	३	×	२

म – म म	प – प प^ध^	^म^री – सा री	नि सा सा सा
धै ऽ व त	श्र ऽ ल्प श्र	यो ऽ ग वि	छ मं स जे
०	३	×	२

रीं मं रीं सां	नि – प म	म प नि पम	री – सा सा
सु न ःहो सु	जा ऽ न च	तु र सु निऽ	सं – म त
०	३	×	२

पाठ ५१

ध्रुवपद—वृन्दावनी सारंग—चौताल

गीत के शब्द

वृन्दावन में भई दुपहरिया तापत
भानु प्रकाश घाम भयो अति दुःसह।
ऐसे समय में कान्ह गयो धेनु चरावन,
कदंब की छैयां त्रिभंगी ठाढ़ो है।
मधुर मधुर मुरली धुन निकसत हरि अधर तैं,
निमीलित नैन सुनत सुर नर भये लीन॥
ग्वाल बाल गोपी जन पशु पंछि वनचर
छांड़ि के स्वभाव सकल मुग्ध मूक ठाढ़े॥

स्थायी

री	सा	—	नि	प	—	नि	सा	—	सा	—	—
वृं	द	ऽ	रा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	में	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
(म) री	री	—	म	प	पम	री	—	—	सा	—	—
भ	ई	ऽ	दु	प	हऽ	री	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि̣ —	सा सा	री (म) —	म —	म प	— प
ता ऽ	प त	भा ऽ	नू ऽ	प्र का	ऽ श
×	०	२	०	३	४
म प	नि̱ प	री —	म पम	री —	मा सा
घा ऽ	भ म	यो ऽ	अ तऽ	दुः ऽ	स ह
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म —	प नि̱	प नि	सां —	— नि	सां सां
ऐं ऽ	ऽ से	ऽ स	मैं ऽ	ऽ का	ऽ न्ह
×	०	२	०	३	४
नि नि	सां रीं	— सां	रीं सां	— नि̱	— प
ग यो	ऽ धे	ऽ नु	च रा	ऽ व	ऽ न
×	०	२	०	३	४
नि̱ प	— री	— सा	री नि	सा सा	— —
क दं	ऽ ब	ऽ कि	छै ऽ	ऽ या	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

मप सां	— नि	प —	री म	पम री	— सा
त्रिऽ भं	ऽ गी	ऽ ऽ	ठा ऽ	ड़ोऽ है	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

संचारी

म म	म म	म म	प प	प —	प प
म धु	र म	धु र	मु र	लि ऽ	धु न
×	०	२	०	३	४
म म	प प	नि प	— नि	प पम	री ऽ
नि क	स त	ह री	ऽ अ	ध रऽ	तें ऽ
×	०	२	०	३	४
प म	— री	— सा	री —	नि सा	सा सा
नि मी	ऽ ली	ऽ त	नैं ऽ	न सु	न त
×	०	२	०	३	४
प प	नि सा	री सा	री म	री म	प प
सु र	न र	मु नि	म ये	ऽ ली	ऽ न
×	०	२	०	३	४

श्यामोग

म —	प नि॒	प नि	सां —	सां —	सां सां
ग्वा ऽ	ल वा	ऽ ल	गो ऽ	पी ऽ	ज न
×	०	२	०	३	४

नि सां	— रीं	मं रीं	सां नि॒	प नि	सां सां
प शु	ऽ पं	ऽ छि	ब न	ऽ च	ऽ र
×	०	२	०	३	४

रीं, —	सां नि॒	प नि	री —	सां नि	सां सां
छां ऽ	ड़ि के	ऽ स्व	भा ऽ	व स	क ल
×	०	२	०	३	४

म प	नि॒ प	— पम	री म	पम री	— सा
मू ऽ	ग्ध मू	ऽ कऽ	ठा ऽ	ढ़ेऽ है	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

पाठ ५२

वृन्दावनी सारंग—दादरा (मध्य लय)

गीत के शब्द

अली कलियन रस मद मातो करत मधुर
गुंजारव सुनि सुनि सखि मन लुभाय गयो मेरो।
हुलसत जिया उपजत हिय नयी उमंग नयो
तरंग तन कांपै उर धरकै कछु न सूझ बूझ परै।
कौन बिथा ये कहो सखि व्याकुल चित्त भयो मेरो॥

स्थायी

प	प	म	रे	म	रे	सा	रे	नि़	सा	रे	रे
अ	ली	ऽ	क	ली	ऽ	य	न	र	स	म	द
×			०			×			०		
म	प	नि	प	—	पम	रे	म	पम	रे	सा	सा
मा	ऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽऽ	क	र	तऽ	म	धु	र
×			०			×			०		
नि़	—	नि़	—	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	सा	सा
गुं	ऽ	जा	ऽ	र	व	सु	नि	सु	नि	स	खि
×			०			×			०		

रे	म	प	सां	–	नि॒	पम	रे	–	म	प	नि॒
म	न	छु	भा	ऽ	य	गऽ	यो	ऽ	मे	रो	ऽ
×			०			×			०		

अंतरा

नि॒	नि॒	प	म	रे	सा	नि़	सा	रे	म	प	नि॒
हु	ल	स	त	जि	या	उ	प	ज	त	हि	य
×			०			×			०		
सां	सां	नि	सां	–	सां	रें	मं	रें	सां	–	सां
न	यी	उ	मं	ऽ	ग	न	यो	त	रं	ऽ	ग
×			०			×			०		
सां	नि	सां	(सां)	नि॒	–	प	म	प	नि॒	प	म
त	न	कां	ऽ	पै	–	उ	र	ध	र	कै	ऽ
×			०			×			०		
रे	म	रे	सा	नि़	सा	रे	म	प	नि	सां	–
क	छु	न	सू	ऽ	झ	बू	ऽ	झ	प	रै	ऽ
×			०			×			०		

रें	पं	मं	रें	सां	नि	सां	—	म	प	नि	सां
कौ	ऽ	न	बि	था	ऽ	ये	ऽ	क	हो	स	खि
×			०			×			०		
रें	—	सां	नि	प	म	रे	म	रे	म	प	नि
व्या	ऽ	कु	ल	चि	त	भ	यो	ऽ	मे	रो	ऽ
×			०			×			०		

पाठ ५३

कोमल ऋषभ कोमल धैवत साधन

ऋषभ एवं धैवत जब अपने स्थान से नीचे हटते हैं तब उनको क्रमशः कोमल ऋषभ अथवा कोमल री तथा कोमल धैवत अथवा कोमल ध कहते हैं।

शुद्ध ऋषभ की हि मुद्रा नीचे की ओर मोड़कर कोमल ऋषभ की मुद्रा होती है।

शुद्ध धैवत की हि मुद्रा नीचे की ओर मोड़कर कोमल धैवत की मुद्रा होती है।

स्वर नाम	स्वर लिपि	मुद्रा
कोमल री	री	

(५) ध, मप, ग, रे सा।

(६) रेंसांनिध, प, मग, रे, सा

(ख)

री, ग, ध, नि कोमल

(१) सा, सां, रेंसां गंरें, सां, निसांरेंसां, निधप।

(२) सा, प, धप, निधप, मग, रेसा।

(३) सा, म, पमग, म, पधपमग, पमग, रे, सा।

(४) सां, नि, ध, प, निधप, सांरेंसांनिधप, धनिसां, निधपमग, रेसा।

(५) प, धप, मप, ग, मप, धनि ध प, धनिसांनिधप, सांरेंसांनिधप, सांनिधपमगरेसा।

———

पाठ ५५

(अ)

शुद्ध री तथा कोमल री की भिन्नता

(१) सा;'''सां, रें, सां–सां, रें, सां। सा;'''सा, रे,सा–

सा, रे, सा।

(२) सां, रें, गं...सां, रें, गं। सा, रे, ग,...सा, रे, ग।

(३) सा, रे, गमप। सा, रे, गमप।

(४) सां, रें...... । सां, रें......

पाठ ५६

(च)

शुद्ध ध तथा कोमल ध की भिन्नता।

(१) सा, प, ध, निधप। सा, प, ध, निधप।

(२) सा, ग, मपध,। सा, ग, मपध,।

(३) सांनिध, निध, प। सांनिध, निध, प।

(४) मपध, पमग। मपध, पमग।

स्वर नाम	स्वर लिपि	मुद्रा
कोमल ध	ध	

कोमल री साधन

(१) सा, सारें सां ।

(२) सारें, सा ।

(३) सा, रें सांनिसां ।

(४) सा, रे सानिसा ।

(५) गंरें, सां, रेंसां ।

(६) गरे, सा, रेसा ।

(७) सा, रेग, म, ।

(८) प, मगरे, सा ।

(९) गमग, रेग, रे, सा ।

(१०) सा, रेग, म, प, ।

कोमल ध साधन

(१) सा, प, ध, प ।

(२) प, मपध, प ।

(३) सां, निध, प ।

(४) गमप, ध, प ।

(५) निसां, निध, प ।

(६) ध प म ग, ।

(७) निध प मग ।

(८) सांनिधपमग ।

(९) गमपध निसां ।

(१०) सांनिध नि सां ।

(११) ध, पमपध ।

पाठ ५४

(अ)

कोमल री, कोमल ध

(१) सां, सांरेंसांनिध, प ।

(२) पधनिसांरें, सां ।

(३) प, मपधपमग, रे, सा ।

(४) सांनिधपमगरे, सा ।

(५) सारेग, मपध, निसां ।

(ब)

कोमल ग, कोमल नि एवं कोमल ध,

(१) सां, सां निधप ।

(२.) मपधनिसां ।

(३) सांरेंगंरेंसांनिधप ।

(४) मप, नि, ध, प ।

(५) ध, मप, ग, रे सा।

(६) रेंसांनिध, प, मग, रे, सा

(म)

री, ग, ध, नि कोमल

(१) सा, सां, रेंसां गंरें, सां, निसांरेंसां, निधप।

(२) सा, प, धप, निधप, मग, रेसा।

(३) सा, म, पमग, म, पधपमग, पमग, रे, सा।

(४) सां, नि, ध, प, निधप, सांरेंसांनिधप, धनिसां, निधपमग, रेसा।

(५) प, धप, मप, ग, मप, धनिधप, धनिसांनिधप, सांरेंसांनिधप, सांनिधपमगरेसा।

———

पाठ ५५

(अ)

शुद्ध री तथा कोमल री की भिन्नता

(१) सा;···सां, रें, सां–सां, रें॒, सां। सा;···सा, रे,सा–सा, रे॒, सा।

(२) सां, रें, गं...सां, रें॒, गं। सा, रे, ग,...सा, रे॒, ग।

(३) सा, रे॒, गमप। सा, रे, गमप।

(४) सां, रें······। सां, रें॒······

पाठ ५६

(ब)

शुद्ध ध तथा कोमल ध की भिन्नता।

(१) सा, प, ध॒, निध॒प। सा, प, ध, निधप।

(२) सा, ग, मपध॒,। सा, ग, मपध,।

(३) सांनिध॒, निध॒, प। सांनिध, निध, प।

(४) मपध॒, पमग। मपध, पमग।

पाठ ५७

शुद्ध एवं कोमल स्वरों की भिन्नता ।

(१) सांरेंसांनिधप । सांरेंसांनिधप ।

(२) रेंसां, निधप । रें, सां, निधप ।

(३) सांरेंगंरेंसां पधनिधप । सां रें गं रें सां, प ध नि ध प ।

(४) सांनिधपमगरेसा । सांनिधपमगरेसा ।

(५) सांरेंसांनिधपमगरेसा । सांरेंसांनिधपमगरेसा ।

(६) धपधमपगमप, मग रेसा । धपधमपगमप, मगरेसा ।

(७) सारेग, गमप, पधनि, निसांरेंसां ।
सारेग, गमप, पधनि, निसांरें,-सां ।

(८) साध । साध ।

(९) सांनिध । सांनि ध ।

(१०) सां, गंरेंसां । सां,गं रें सां ।

सूचनाः—इस प्रकार छात्रों की समझ में शीघ्रतया आवें, ऐसे अनुकूल स्वरसमुदायों को उपयोग में लाकर स्वयं उन स्वरसमुदायों को स्पष्ट कण्ठ स्वर से गा कर सुनाना चाहिए। पश्चात् छात्रों से गवाना चाहिए। यह सब शिक्षक के निजी अनुभव एवं चाणाक्षता पर निर्भर है।

पाठ ५८.

राग भैरव, ठाठ भैरव

भैरवराग में कोमल ऋषभ एवं कोमल धैवत तथा शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर धैवत एवं संवादी ऋषभ है। गाने का समय प्रातः काल में, सूर्योदय का है। ऋषभ एवं धैवत इस राग में सदा आन्दोलित अर्थात् डोलते हुवे लगते हैं। इस राग में सब स्वर आरोह अवरोह में लगते हैं अतएव यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका विस्तार मन्द्र सप्तक में भी बहुत होता है।

आरोहः—सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

अवरोहः—सां, निध, प, म, गरे, सा।

स्वर विस्तार

सा, रे, रे, सा, निसा, रेरे, सा, साध, निसा, रे, गम, रे, सा।

म ग ग ग रे
सा, रे, ग, म, रे,गम, मप, म, पग, मरे, रेप, म, गमरे,

रे, सा ।

नि नि नि ग
निसाग, म, मप, पगमध, ध, ध, ध, प, मप, म, गम, रे,

रे ग ग
ग, म, प, प, म, ग, मरे, रे, सा ।

सा नि नि नि प नि ग
सा, ध, ध, प, मप्र, गमध, ध, प, धमप, गमध, परेम,

नि नि म प प ग ग
ग प, मध, ध, प, धधपम, प, म, गमपरे, गम, रेप, गमरे,

रे, सा ।

नि नि नि
प, मप, रेप, गमध, प, निध, प, सां, निध, प,

ग ग
मपगमनिधप, रेगमप, गमपगम, रे, रे, सा ।

नि
प, पध, निनिसां, निसां धनिसांरें, रें, रें, सां, निसां,

निसारेंसां, ध, प, पपमगम, ध, सां, ध, प, गमप, म,

निधपमपम, गम, रे, रे, सा।

सां, निसां, ध, निसां, रें, रें, रें, सां, गंमं, रें, रें, सां,

निसारेंसां, ध, प, गमनिधसां, ग, म, रेपगम, रे, रे सा।

पाठ ५६

सरगम, भरव-त्रिताल

स्थायी

प म ग रे	सा ग - म	ध - प -	म ग रे सा
नि सा ग म	प ग म प	ध नि सां -	ध नि सां रें
सां नि ध प	नि ध प म	ग रे सा -	रे ग - म

अंतरा

ध प म ग ०	म (नि)ध – ध ३	मां – नि नि ×	सां – – – २
ध नि सां रें ०	– रें सां – ३	सां नि – नि ×	ध – ध प २
– प म ग ०	म प ध नि ३	सां नि ध प ×	म ग रे सा २

पाठ ६०

भैरव-त्रिताल

गीत के शब्द

कन्हैया तोरी बांसुरी, नीकी लगत अत
मधुर धुन सुनि सुधि-बुधि सब हार गई
लगी लगन आज मोरी
जल भरन जमुना जो मैं गई री सुनि बांसुरी की
धुन ग्यान ध्यान लाज काज भूल गई भइ बौरी

भैरव-त्रिताल

स्थायी

प	प ग म रे सा	नि ध – ध प	– ध प म प	म ग म रे सा
क	न्है या तो री	गां ऽ सु री	ऽ नी की ऽ ल	ग ऽ त अ त
	३	×	२	०
	सा नि सा ग म	प रे सा नि	सा ग म प	ध नि सां रें
	म धु र धु	न सु नि सु	धी धु धी स	ब हा ऽ गं
	३	×	२	०
	सां – – रें	नि ग म ध ध	नि नि सां सां ध	– प – ध
	ई ऽ ऽ ल	गी ल ग न	आ ऽ ज मो	ऽ री ऽ क
	३	×	२	०
	प म प ग म			
	न्है या तो री			
	३			

अंतरा

म ग म ध (नि)	ध नि सां सां	रें (गं) – सां नि	सां – – सां
ज ल म र	न ज मु ना	जो ऽ में ग	ई ऽ ऽ री
०	३	×	२
ध नि सां रें	नि सां (सां) ध (नि) प	म ग म रे	– – सा म ग
सु नि यां सु	री की धु न	ग्या ऽ न ध्या	ऽ न ला ऽ
०	३	×	२
म (नि) ध सां सां	रें सांनि सां ध (नि)	प – – म	रे (ग) – ग प (म)
ज का ऽ ज	भू ऽऽ ल ग	ई ऽ ऽ म	ई ऽ ऽ यो
०	३	×	२
रे सा – – ध	म (प) प ग म (ग)		
ऽ री ऽ क	है या तो री		
०	३		

पाठ ६१

भैरव-लक्षणगीत-एकताल

गीत के शब्द

रागनमों राग प्रथम भैरवगुनि
गावत नित प्रातसमे उपजावत
भक्ती रस अतहि मधुर ।
धैवत वादी सुर लिये
रेखव सम वादी गहे
किये विस्तार गुन पावत
सुनो सुजान कहे चतुर

भैरव–लक्षणगीत एकताल

स्थायी

ग	ग	ग	ग			नि					
रें	रे	रे	रे	सा	निसा	ध	—	ध	नि	सा	सा
रा	ऽ	ग	न	मों	ऽऽ	रा	ऽ	ग	प्र	थ	म
×		०		२		०		३		४	

		ग		म		म		ग			
ग	म	रे	रे	ग	प	ग	(म)	रे	रे	सा	सा
भै	ऽ	र	व	गु	नि	गा	ऽ	व	त	नि	त
×		०		२		०		३		४	

निरतत तांडव शिव कैलासपति महेश
डंवरू नाद अंत गंभीर शब्द बजत
हर हर हर ॥

स्थायी

(नि)ध̲	–	ध̲	प	–	ध̲	प	म	प	म	ग	म
चं	ऽ	द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
(ग)म	(ग)रे̲	–	(म)ग	प	प	(ग)म	ग	म	(ग)रे̲	–	सा
ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट	गं	ऽ	ग	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
(नि)ध̲	ध̲	–	नि	सा	सा	रे̲	--	रे̲	सा	–	सा
ग	र	ऽ	सो	ऽ	हे	रू	ऽ	ड	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
(नि)ध̲	–	सां	–	ध̲	प	(ग)म	प	रे̲	–	सा	सा
सो	ऽ	हे	ऽ	अ	त	बा	ऽ	घां	ऽ	ब	र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(नि)ध	—	ध	नि	सां	सां	नि	सां	सां	—	सां	सां
भा	ऽ	ल	लो	च	न	अ	त	उ	ऽ	ज्ज्व	ल
×		०		२		०		३		४	
रें	—	रें	रें	सां	सां	सां	नि	सां	(नि)ध	—	प
गौ	ऽ	र	ब	र	न	व	द	न	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
(नि)ध	—	(ध)—	सां	—	सां	नि	सां	सां	(नि)ध	—	प
अं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	व	भू	ऽ	त	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
(ग)म	(ग)रे	—	(म)ग	प	प	म	ग	म	(ग)रे	सा	सा
अ	त	ऽ	सो	ऽ	हे	त्रि	शू	ऽ	ल	क	र
×		०		२		०		३		४	

संचारी

सा	—	—	(नि)ध	—	ध	(नि)ध	—	ध	प	—	प
ब्र	ऽ	ऽ	ह्मा	ऽ	ग	णे	ऽ	श	शे	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	

नि॒ सा	ग म	ध॒ –	ध॒ ध॒	ध॒ –	प प
आ ऽ	त स	मे ऽ	उ प	जा ऽ	ध त
×	०	२	०	३	४

म॒ –	सां –	ध॒ प	म प	म रे॒	रे॒ सा
म ऽ	की ऽ	र स	अ त	हि म	धु र
×	०	२	०	३	४

अंतरा

ध॒ –	ध॒ ध॒	नि सां	सां –	नि सां	सां सां
घै ऽ	ब त	बा –	दो ऽ	सु र	लि ये
×	०	२	०	३	४

रें –	रें रें	सां सां	नि (सां)	ध॒ –	प प
रे ऽ	ख ब	स म	बा ऽ	दो ऽ	ग हे
×	०	२	०	३	४

म मग	प रे॒	– सा	ग म	प ध॒	नि सां
कि येऽ	वि स्ता	– र	गु न	पा ऽ	ब त
×	०	२	०	३	४

रें रें	सां नि	ध प	म ग	म रे(ग)	रे सा
सु नो	सु जा	ऽ न	क हे	ऽ च	तु ऽ
×	०	२	०	३	४

पाठ ६२

भैरव-ध्रुवपद चौताल

गीत के शब्द

चन्द्रमा ललाट सोहे , जटा जूट गंग सोहे ।
गर सोहे रुण्ड माल , सोहे अत बाघांबर ॥

भाल लोचन अत उज्ज्वल नेत्र
गौर बरन बदन सोहे
अंग बभूत सोहे
अत सोहत त्रिशूल कर ॥

ब्रह्मा गणेश शेष, नारायण नारद मुनि ।
जपत नाम अस्तुत गाय जय हर-हर शिवशंकर ॥

निरतत तांडव शिव कैलासपति महेश
डंवरू नाद श्रत गंभीर शब्द बजत
हर हर हर ॥

स्थायी

नि ध	—	ध	प	—	ध	प	म	प	म	ग	म
चं	ऽ	द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
ग म	ग रे	—	म ग	प	प	ग म	ग	म	ग रे	—	सा
ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट	गं	ऽ	ग	सो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
नि ध	ध	—	नि	सा	सा	रे	—	रे	सा	—	सा
ग	र	ऽ	सो	ऽ	हे	रू	ऽ	ह	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
नि ध	—	सां	—	ध	प	ग म	प	रे	—	सा	सा
सो	ऽ	हे	ऽ	श्र	त	वा	ऽ	घां	ऽ	ब	र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(नि)ध –	ध नि	सां सां	नि सां	सां –	सां सां
भा ऽ	ल लो	च न	अ त	उ ऽ	ज्ज्व ल
×	०	२	०	३	४

रें –	रें रें	सां सां	सां नि	सां (नि)ध	– प
गौ ऽ	र ध	र न	ग द	न सो	ऽ हे
×	०	२	०	३	४

(नि)ध –	(ध)– सां	– सां	नि सां	सां (नि)ध	– प
अं ऽ	ऽ ग	ऽ ध	भू ऽ	त सो	ऽ हे
×	०	२	०	३	४

(ग)म (ग)रे	– (म)ग	प प	म ग	म (ग)रे	सा सा
अ त	ऽ सो	ऽ हे	त्रि शू	ऽ ल	क र
×	०	२	०	३	४

संचारी

सा –	– (नि)ध	– ध	(नि)ध –	ध प	– प
अ ऽ	ऽ छा	ऽ ग	णे ऽ	श शे	ऽ ष
×	०	२	०	३	४

ध	—	ध	—	नि	सां	रें	सां	नि	सां	ध	प
ना	ऽ	रा	ऽ	य	ण	ना	ऽ	र	द	मु	नि
×		०		२		०		३		४	
म	ग	रे	(म)ग	प	प	म	ग	म	(ग)रे	सा	सा
ज	प	त	ना	ऽ	म	अ	स्तु	त	गा	ऽ	य
×		०		२		०		३		४	
सा	सा	म	ग	प	प	ध	ध	(नि)ध	—	प	प
ज	य	ह	र	ह	र	शि	व	शं	ऽ	क	र
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प	प	—	ध	—	नि	सां	—	नि	सां	सां	सां
नि	र	ऽ	त	ऽ	त	तां	ऽ	ड	व	शि	व
×		०		२		०		३		४	
रें	—	—	गं	—	मं	(ग)रें	सां	सां	(नि)ध	—	प
कै	ऽ	ऽ	ला	ऽ	स	प	ति	म	हे	ऽ	श
×		०		२		०		३		४	

ग म	ग	म	ग रे	—	सा	म	ग	म	नि ध	—	प
इं	च	रू	ना	ऽ	द	अ	त	रं	भी	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

रें	—	रें	रें	सां	सां	सा	सा	म	ग	प	प
श	ऽ	ब्द	ब	ज	त	ह	र	ह	र	ह	र
×		०		२		०		३		४	

पाठ ६३

राग आसावरी-ठाठ आसावरी

आसावरी राग मे कोमल गांधार, कोमल धैवत एवं कोमल निपाद लगते हैं। शेष सब स्वर शुद्ध हैं। इस राग के आरोह में गांधार एवं निपाद नहीं लगाते। अवरोह मे सब स्वर लगते हैं। अतएव यह औडव-संपूर्ण राग है। इसका वादी स्वर धैवत एवं संवादी ऋषभ है। गाने का समय दिन का २ रा प्रहर है। यह राग अति प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है।

आरोहः—सारेमप, नि ध, सां।

अवरोहः—सांनिधप, मग, रे, सा।

रेंनिधंप, मपधसां, रेंध, प, निध, प, म, म, प ध ग, रे, सा।

पाठ ६४

सरगम-आसावरी-त्रिताल

स्थायी

रे	म	प	सां	ध	-	प	-	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
३				×				२				०			
रे	रे	सा	रे	(नि)ध	--	प	-	म	प	ध	प	ग	ग	रें	सा
३				×				२				०			

अंतरा

म	मं	प	प	(नि)ध	-	म	प	मं	-	सां	-	रें	--	मं	-
३				×				२				०			

नि ध	-	ध	सां	-	सां	सां	रें	ग गं	-	रें	सां	रें	नि	ध	प
३				×				२				०			
म	प	मां	-	ग	--	रे	सा	गं	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
३				×				२				०			

पाठ ६५

राग आसावरी-लक्षणगीत झपताल

गीत के शब्द

मृदु निधग सुर लिये, उपजत मेल
आसावरी जामें निकसत सुरागनो
नाम आसावरी ॥
अंश धैवत रुचिर संवदत गांधार
अगनि अनुलोम दिन दूजे पहर गेय
अतही मनोहरी ॥

आसावरी—लक्षणगीत—झपताल

स्थायी

म प	नि ध प	म ग ग	रे सा –
मृ दु	नि ध ग	सु र	लि ये ऽ
×	२	०	३
म रे म	प प सां	नि ध ध	प – प
उ प	ज त म	धु र	मे ऽ ल
×	२	०	३
प रें –	सां – रें	नि ध –	प – प
आ ऽ	सा ऽ व	री ऽ	जा ऽ में
×	२	०	३
म म	प प सां	नि ध –	नि ध – प
नि क	स त सु	रा ऽ	ग नी ऽ
×	२	०	३
प म प	प ध ग –	रे सा	रे सा –
ना ऽ	म आ ऽ	सा ऽ	व री ऽ
×	२	०	३

अंतरा

	नि		
म –	प ध –	सां सां	सां सां सां
अं ऽ	श धैं ऽ	च त	रु चि र
×	२	०	३
नि	गां		नि
ध –	सां सां गं	रें सां	ध – प
सं ऽ	च द त	गां ऽ	धा ऽ र
×	२	०	३
म म	म म म		
गं गं	गं गं गं	रें –	रें सां सां
अ ग	नि अ नु	लो ऽ	म दि न
×	२	०	३
प			
म प	ध सां सां	ध ध	प – प
दू ऽ	जे ऽ प	हू . र	गे
×	२	०	३
प प	प	म	
म म	प – ध	ग –	रे सा –
अ त	ही ऽ म	नों ऽ	ह री ऽ
×	२	०	३

पाठ ६६

आसावरी-त्रिताल

गीत के शब्द

हांसत गावत सब ग्वाल गोपाल
श्याम संग जमुना तट अत रससों
खेलत धूम धाम सों नाचत।
सुर नर मुनि कोऊ भेद न जाको
पायो ऐसो अपरंपार,
नाथ जगत को गोप ग्वाल विच
हिल मिल राग रंग रास रचत।

आसावरी-त्रिताल

स्थायी

प प	म	म	नि
धु म पधु मप	गु गु रे सा	रे म प सां	धु – प धु
हां स तऽ गाऽ	व त स ब	ग्वा ऽ ल गो	पा ऽ ल, श्या
२	०	३	×
	नि	प म	म
म म प प	धु धु प --	धु म धु प	गु गु रे सा
म सं ग	ज मु ना ऽ	त ट अ त	र स सों ऽ
२	०	३	×

रे – सा सा	ग रे म प रे म	प म प नि	ध म प सां
खे ऽ ल त	धू ऽ म धा	ऽ म सों ऽ	ऽ ना च त
२	०	३	×

अंतरा

म म प प	नि ध ध प म प	सां – सां सां	सां – सां –
सु र न र	मु नि को ऊ	मे ऽ द न	जा ऽ को ऽ
२	०	३	×
नि ध – ध –	सां – सां –	रें गं रें सां	सा रें नि ध प
पा ऽ यो ऽ	ऐ ऽ सो ऽ	अ प रं ऽ	पा ऽ ऽ र
२	०	३	×
प म – प सां	नि ध ध प –	म ग – रेसा रे	– रे सा सा
ना ऽ थ ज	ग त को ऽ	गो ऽ पऽ ग्वा	ऽ ल बि च
२	०	३	×
म रे रे म म	प – नि प ध	– ध सां –	सां म प सां
हि ल मि ल	रा ऽ ग रं	ऽ ग रा ऽ	स, र च त
२	०	३	×

पाठ ६७

आसावरी-भजन-त्रिताल

गीत के शब्द

तुमबिन को रखवार हमारो
दीननाथ तुम पतित उधारन
आयो शरण तिहारे द्वार।
दीन दुनी के हो तुम दाता
दुखियन के दुख हर परमेसर
अबकी रखियो टेक हमारी,
सदासदा मैं दास तिहार॥

स्थायी

म	म	नि	म
ग ग रे सा	रे म प प	ध – प प	मप धप ग –
तु म बि न	को ऽ र ख	वा ऽ र ह	माऽ ऽऽ रो ऽ
०	३	×	२
	म	नि	
रे रे सा सा	रे म प प	ध – प प	ध म प –
तु म बि न	को ऽ र ख	वा ऽ र ह	मा ऽ रो ऽ
०	३	×	२

ग – ग रे	– सा सा सा	रे रे म म	प – ध प
दी ऽ न ना	ऽ थ तु म	प ति त उ	धा ऽ र न
०	३	×	२
म प गं –	रें रें सां सां	म – प सां	ध – – प
श्रा ऽ यो ऽ	श र ण ति	हा ऽ ऽ रे	द्वा ऽ ऽ र
०	३	×	२

अंतरा

म – प प	ध – ध –	सां – सां सां	सां – सां –
दी ऽ न दु	नी ऽ के ऽ	हो ऽ तु म	दा ऽ ता ऽ
०	३	×	२
ध ध ध ध	सां – सां सां	गं गं रें सां	रें नि ध प
दु खि य न	के ऽ दु ख	ह र प र	मे ऽ स र
०	३	×	२
म म प सां	ध ध प –	ग – रे सा	रे ग सा –
श्र ब की ऽ	र खि यो ऽ	टे ऽ क ह	मा ऽ री ऽ
	३	×	२

सा	सा	ग॒ं	ग॒ं	रें॒	--	सां	--	रें	--	सां	रें	ध॒ (नि)	--	प	प
स	दा	ऽ	स	दा	ऽ	मैं	ऽ	दा	ऽ	स	ति	हा	ऽ	ऽ	र
०				३				×				२			

पाठ ६८

राग भैरवी—ठाठ भैरवी

भैरवी में री, ग, ध, नि, कोमल एवं मध्यम शुद्ध लगता है। जैसे—

सा, रे॒, ग॒, म, प, ध॒, नि॒, सां।

सां, नि॒, ध॒, प, म, ग॒, रे॒, सा।

इस स्वर सप्तक को भैरवी मेल अथवा भैरवी ठाठ कहते हैं, क्योंकि इसमें से भैरवी राग उत्पन्न होता है।

भैरवी एक ऐसा राग है कि कोई संगीत प्रेमी कचित् ही ऐसा होगा जिसने इसको सुना न हो। अति लोकप्रिय राग है। इसकी मधुरता एवं कोमलता श्रोताओं के मन पर अपना प्रभाव किये बिना रहती नहीं। अस्तु।

भैरवी का वादी स्वर मध्यम एवं संवादी स्वर षड्ज है। कुछ लोग इसमें धैवत को वादी करके गाते हैं। वादी भेद के कारण राग के

स्वरूप एवं प्रभाव में भिन्नता अवश्य आती है। मध्यम वादी करके गाई हुई भैरवी अधिक शांत एवं गंभीर लगती है। गाने का समय दिन का दूसरा प्रहर है। सब स्वर लगते हैं, अतएव संपूर्ण जाति का राग है। ऋषभ स्वर आरोह में कभी-कभी दुर्बल किया जाता है।

इस राग में ध्रुपद होरी, एवं छोटे गीत, ठुमरी, दादरे तथा भजन बहुत गाये जाते हैं। ठुमरी दादरों में इस राग के शुद्ध स्वरूप की ओर दुर्लक्ष्य करके, केवल माधुर्य एवं वैचित्र्य के हेतु से इसमें विवादी स्वरों का उपयोग पर्याप्त प्रमाण में करने का प्रचार आजकल हो गया है, यहाँ तक की वास्तविक भैरवी प्रचार से दूर हटती जा रही और उसके स्थान पर यह विचित्र भैरवी (विकृत) जम रही है। अस्तु।

आरोह—सा, रेग, म, प, धनिसां।

अवरोह—सां, निधप, मग, रेसा।

पकड़—म, ग, सारेसा। (मध्यमवादी) अथवा

सा, ध, पमग, सारेसा (धैवतवादी)

स्वरविस्तार

(मध्यमवादी)

(१) सा, रेसा, ग, पम, गम, ग, मगरेसा।

(२) सा, ध, निसा, गमपम, धपम, सारेग, म, पम, गम, गरेसा।

(३) सा, पम, रे, रेसा, ग, म, धपम, निधपम, धपम, सागमपधपम, गमपगम, रेसा।

(४) निसागमप, म, धपम, गमगपम, पधनिधपम, गमपधपम, पधनिसां, निधपम, धपम, ध, म, पम, गमपमगरेसा ।

(५) धप, गमध, निसां, धनिसां, रेंसां, निसरेंसां धप, गं, रेंसां, धनिसां, निधप, गमपधनि, धप, म, निधपमग, मपम, गम, ग, रेसा ।

(६) निसागमप, गमध, निसां, गं, रेंसां, सारेंगंमं, गंमं रें, सां, गं रें सां, ध नि रेंसां, धनिसां, निधप, गम, धपम, गमपमग, रेसा ।

(धैवतवादी)

(१) सा, ध, प, धमप, गमप, धपमगरेसा ।

(२) सा, रेसा, ध, सा, ग, सारेसा, सागमपध, पग, सारेसा ।

(३) सा, प, प, धप, गप, पध, ध, प, गमप, धसां, धप, निध, धप, धपमग, सागमपधपमग रेसा ।

(४) निसागमप, धप, निधप, धसां, धप, धनिसांरेंसां,

धप, ध, ध, पनिधप, गमनिधप, गमपध-
पमगरेसा ।

(५) धमधनिसां, रेंसां, गंरेंसां, धसां निरेंसां, धप, गप,
प, धसां, धप, गंरेंसांनिधप, निधपमगरेसा ।

(६) सां, धनिसां, रेंसां, गं, गंमंपंमंगं, रेंसां, ध,
निगंरेंसां, रेंनिसां, धप, गप, प, धसां, धप, निध,
प, धपग, सागमपधपग, पग, मपमग, रेसा ।

(विकृत भैरवी)

(१) सा, गमपम, ग रेसा, निसा, गमप, धपग, रेगप,
पधनिधप, धपम, मम, गम, सागमपमगम, रेसा ।

(२) सा, निसा, ग, रेग, सारे, रेग, रेमग, सारेमपमग,
म, रेसा, गमप, धप, निधप, गप, पधनिममग,
रेसा ।

(३) निसागमधपमगरेसा, प, पधप, पधनि, धनि,
(नि), धप, धसां, रेंसां, धप, निधनिधनि, धप,
ध, ध, धनिसांनिधप, गप, सागमपध, ममग,
रेसा ।

(४) ध, ध नि सां, सां, निसां, निसांरें, सां, धप, पधनिसांरें, रेंसां, धप, ध गंरेंगंसांरेंसां, धप, पधनि, धनि, रेंसां, धप, ध, ध, धनिधमगरे, रेगमधमगरे, गमगमग, रेसा ।

(५) सां, धसां, गं, रेंसां, गंमं, रेंसां, सांरेंगरेंग, रेंगंमं, ग रेंसां, गंरेंसांरेंसां, निसांरेंसां, धप, धसां, ध, नि रेंसांधप, निधनि, (नि), धप, धसां, ध, नि ध-मगरेसा, रेनिसा, ध, निसा ।

पाठ ६६

लक्षणगीत भैरवी—त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

गुनिजन बरनत भैरवि रागिणि, संपूर्ण मृदु रीगमधनियुत, मध्यम वादी खरज सुर सहचर ।
दिन दूजे पहर गाय सुलच्छन चतुर बखानत सुनो सुजान
उपजत रस अनुराग सुनत ही, सोहत मोहत मन अति सुन्दर ।

लक्षणगीत-भैरवी
स्थायी

सा रीु गु म	ध म गु म	गु — सा रीु	सा — धु निु
गु नि ज न	व र न त	भै ऽ र वि	रा ऽ ग नि
०	३	×	२
सा — सा —	रीु सा निु सा	रीु गु म धु	निु (निु) धु प
सं ऽ पू ऽ	र न मृ दु	री ग म ध	नि ऽ यु त
०	३	×	२
धु प म म	गु — रीु सा	सा रीु गु म	रेु रेु सा सा
म ऽ ध्य म	वा ऽ दी म्व	र ज सु र	म ह च र
०	३	×	२

अंतरा

धु प गु म	धु धु निु निु	सां — सां सां	सां — सां सां
दि न दू ऽ	जे प ह र	गा ऽ ये सु	ल ऽ च्छ न
०	३	×	२
निु निु निु निु	सां — सां सां	रींु सां निु सां	धु प — प
च तु र व	खा ऽ न त	सु नो ऽ सु	जा ऽ ऽ न,
०	३	×	२

प	प	प	प	ध	प	म	म	प	म	ग	म	ग री	री	सा	–
उ	प	ज	त	र	स	अ	नु	रा	ऽ	ग	सु	न	त	ही	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ग	म	प	ध	नि	सां	रीं	सां	ध	प	री ग	ग	री	सा
सो	ऽ	ह	त	मो	ऽ	ह	त	म	न	अ	त	सुं	ऽ	द	र
०				३				×				२			

पाठ ७०

भजन, भैरवी—त्रिताल (मध्यलय)

गीत के शब्द

बिन करतब कस जीवन तेरो ,
नरतन अमोल पायो जग में , कुछ कर काज सुजन उपयुगत ।
शुद्ध चरित रखि निर्मल तन मन, कीजो दुःखित कष्ट निवारण ,
देश समाज विबुध जनसेवा , कर सार्थक मनुज जीवन नित ।

भैरवी—कहरवा

स्थायी

म म प म	(री) ग ग री सा	सा री ग ग	म – म –
चि न क र	त ब क स	जी ऽ व न	ते ऽ रो ऽ
×	०	×	०
प प प प	ध सां – सां	नि – नि (नि)	प ध प –
न र त न	अ मो ऽ ल	पा ऽ यो ऽ	ज ग मों ऽ
×	०	×	०
प प ध प	म – म ग	ग म प म	(री) ग ग री सा
कु छ क र	का ऽ ज सु	ज न उ प	जू ऽ ग त
×	०	×	०

अंतरा

प – प प	ध ध नि नि	सां सां सां सां	सां सां सां सां
सु ऽ द्ध च	रि त र खि	नि र म ल	त न म न
×	०	×	०
सां रें गं –	रें – सां सां	सां – रें सां	(नि) ध – प प
की ऽ जो ऽ	दुः ऽ खि त	क ऽ ष्ट नि	वा ऽ र न
×	०	×	०

प - प ध	नि - नि नि	सां सां रीं सां	ध - प -
दे ऽ श स	मा ऽ ज वि	बु ध ज न	से ऽ वा ऽ
×	०	×	०
प प पध निसां	नि ध प म	ग ग म म (प)	ग ग रे सा
क र साऽ ऽऽ	र थ क म	तु रा जी ऽ	ध न नि त
×	०	×	०

पाठ ७१

ध्रुवपद—राग भैरवी—चौताल

गीत के शब्द

कहे कोउ राम नाम, अल्ला नाम कहे कोऊ।
रूप देखि कोऊ मगन तरे कोउ नाम ही सों ॥
परब्रह्म परमेश्वर दूजो नाहिं पालनहार ।
नाम रूप गुण सकल दुख द्वन्द्व हरे जासों ॥
रच्यो अखिल संसार या हि अपनी इच्छा सों ।
लिपटि रह्यो पामर नर मायामरमजाल सों ॥
जीवातम परमातम अपंपार प्रगट गुपत ।
भेद आपपर ता को मिटे साच ग्यान सों ॥

ध्रुवपद भैरवी—चौताल

स्थायी

ध̲	प	—	ग̲	—	म	रे̲	ग̲	रे̲	सा	—	
क	है	ऽ	को	ऽ	उ	रा	ऽ	म	ना	ऽ	
×		०		२		०		३		४	

रे	नि̲	—	सां	—	रे̲	ग̲	—	म	म	म	
अ	ल्ला	ऽ	ना	ऽ	म	को	ऽ	उ	क	है	
×		०		२		०		३		४	

रा	—	ध̲	प	—	ध̲	नि̲	ध̲	पम	प	म	
रू	ऽ	प	दे	ऽ	खि	को	ऊ	ऽऽ	म	ग	
×		०		२		०		३		४	

सा	सा	रे̲	ग̲	प	म	ग̲	म	ग̲	रे̲	—	
त	रे	ऽ	को	ऽ	उ	ना	ऽ	म	ही	ऽ	
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

^म^ग	म ^नि^ध	-- नि	सां सां	सां –	सां सां
र	ऽ अ	ऽ ह्म	प र	मे ऽ	श्व र
	०	२	०	३	४
–	नि सां	-- सां	रें सां	सां ध	-- प
ऽ	जो ना	ऽ हि	पा ल	न हा	ऽ र
	०	२	०	३	४
–	प प	ध नि	ध प	म प	म म
ऽ	म रू	ऽ प	गु न	ऽ स	क ल
	०	२	०	३	४
सा	रे ग	– म	रे रे	ग रे	-- सा
ख	ऽ दौं	ऽ द	ह रे	ऽ जा	ऽ सों
	०	२	०	३	४

संचारी

सा	ध प	प प	ध --	– प	-- प
च्यो	ऽ अ	खि ल	स ऽ	ऽ सा	ऽ र
	०	२	०	३	४

ध्रुवपद भैरवी—चौताल

स्थायी

ध	प	—	ग	—	म	रे	ग	रे	सा	—	सा
क	हे	ऽ	को	ऽ	उ	रा	ऽ	म	ना	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	
रे	नि	—	सां	—	रे	ग	—	म	म	म	—
अ	ल्ला	ऽ	ना	ऽ	म	को	ऽ	उ	क	है	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सा	—	ध	प	—	ध	नि	ध	पम	प	म	म
रू	ऽ	प	दे	ऽ	खि	को	ऊ	ऽऽ	म	ग	न
×		०		२		०		३		४	
सा	सा	रे	ग	प	म	ग	म	ग	रे	—	सा
त	रे	ऽ	को	ऽ	उ	ना	ऽ	म	ही	ऽ	सों
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(म)ग	म (नि)ध	-- नि	सां सां	सां —	सां सां
र	ऽ ग्र	ऽ ह्म	प र	मे ऽ	ख्व र
	०	२	०	३	४

--	नि सां	-- सां	रें सां	सां ध	-- प
ऽ	जो ना	ऽ हि	पा ल	न हा	ऽ र
	०	२	०	३	४

--	प प	ध नि	ध प	म प	म म
ऽ	म रू	ऽ प	गु न	ऽ स	क ल
	०	२	०	३	४

सां	रे ग	— म	रे रे	ग रे	— सा
ख	ऽ दों	ऽ द	ह रे	ऽ जा	ऽ सों
	०	२	०	३	४

संचारी

सा	ध प	प प	ध —	— प	-- प
च्यो	ऽ अ	खि ल	स ऽ	ऽ सा	ऽ र
	०	२	०	३	४

–	गं	मं	–	मं	गं	रें	गं	रें	–	सां
ऽ	द	आ	ऽ	प	प	र	ऽ	ता	ऽ	को
	०		२		०		३		४	

सा	रे	ग	–	म	रे	ग	रे	सा	–	--
टे	ऽ	सा	ऽ	चे	ग्या	ऽ	न	सों	ऽ	ऽ
	०		२		०		३		४	

समाप्त